BA'DE FAJR MADANI HALQA (HINDI)

ज़ैली हल्क़े के 12 मदनी कामों में से दूसरा मदनी काम

बा'दे फ़ज्र मदनी हल्क़ा

पेशकश : मर्कज़ी मजलिसे शूरा

(दा'वते इस्लामी)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَ السَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा । दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तर्जमा : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इल्मो हिक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले ।

(مستطرف ج ١ ص ٤٠ دارالفكر بيروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक-एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये ।

त़ालिबे ग़मे मदीना
बक़ीअ़
व मग़फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : सब से ज़ियादा ह़सरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इल्म ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इल्म ह़ासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन उस ने न उठाया (या'नी उस इल्म पर अ़मल न किया) (تاريخ دمشق لابن عساكر ج ٥١ ص ١٣٨ دارالفكر بيروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो मक्तबतुल मदीना से रुजूअ़ फ़रमाइये ।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَ السَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

मजलिसे तराजिम हिन्द (दा'वते इस्लामी)

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ येह रिसाला मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी) ने उर्दू ज़बान में मुरत्तब किया है । मजलिसे तराजिम (हिन्द) ने इस रिसाले को हिन्दी रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और मक्तबतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है।

इस रिसाले में अगर किसी जगह ग़लत़ी पाएं तो मजलिस को सफ़ह़ा और सत़र नम्बर के साथ Sms, E-mail, Whats App या Telegram के ज़रीए इत्तिलाअ़ दे कर सवाबे आख़िरत कमाइये ।

मदनी इल्तिजा : इस्लामी बहनें डायरेक्ट राबित़ा न फ़रमाएं !!!

...राबित़ा :-

सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा, अह़मदाबाद-1, गुजरात (हिन्द) ☎ 9327776311

E-mail : tarajim.hind@dawateislami.net

उर्दू से हिन्दी रस्मुल ख़त़ (लीपियांतर) ख़ाका

थ = تھ	त = ت	फ = پھ	प = پ	भ = بھ	ब = ب	अ = ا
छ = چھ	च = چ	झ = جھ	ज = ج	स = ث	ठ = ٹھ	ट = ٹ
ज़ = ذ	ढ = ڈھ	ड = ڈ	ध = دھ	द = د	ख़ = خ	ह़ = ح
श = ش	स = س	ज़ = ژ	ज़ = ز	ढ़ = ڑھ	ड़ = ڑ	र = ر
फ़ = ف	ग़ = غ	अ़ = ع	ज़ = ظ	त़ = ط	ज़ = ض	स = ص
म = م	ल = ل	घ = گھ	ग = گ	ख = کھ	क = ک	क़ = ق
ी = ی	ु = ُ	आ = آ	य = ی	ह = ھ	व = و	न = ن

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَ السَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

बा' दे फ़ज्र मदनी हल्क़ा

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जिस ने किताब में मुझ पर दुरूदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फ़िरिश्ते उस के लिये **बख़्शिश की दुआ** करते रहेंगे ।[1]

अ़जब करम है कि ख़ुद मुजरिमों के ह़ामी हैं गुनाहगारों की बख़्शिश कराने आए हैं
वोह पर्चा जिस में लिखा था दुरूद उस ने कभी येह उस से नेकियां उस की बढ़ाने आए हैं[2]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मा' मूलाते इमाम ह़सन मुज्तबा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه

ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने एक बार मदीनए मुनव्वरा के एक क़ुरैशी शख़्स से ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ह़सन बिन अ़ली رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا के मुतअ़ल्लिक़ दरयाफ़्त फ़रमाया तो उस ने अ़र्ज़ की : ऐ अमीरुल मोमिनीन ! **वोह नमाज़े फ़ज्र अदा फ़रमाने के बा'द सूरज तुलूअ़ होने तक मस्जिदे नबवी ही में तशरीफ़ फ़रमा रहते** । फिर मुलाक़ात

[1] .....معجم اوسط، باب الالف، من اسمه احمد، ۱/۴۹۷، حدیث: ۱۸۳۵

[2] .....सामाने बख़्शिश, स. 93-94 मुल्तक़त़न

के लिये आए हुए मुअ़ज़्ज़ीन से मिलते और गुफ़्तगू फ़रमाते यहां तक कि कुछ दिन निकल आता तो 2 रक्अ़त नमाज़ अदा फ़रमा कर उम्महातुल मोमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُنَّ की ख़िदमत में सलाम अ़र्ज़ करने के लिये तशरीफ़ ले जाते, वोह आप को (ख़ुश आमदीद कहतीं और) बसा अवक़ात कोई चीज़ तोह़्फ़तन पेश फ़रमातीं। इस के बा'द आप अपने घर तशरीफ़ ले जाते।[1]

क्या बात रज़ा उस चमनिस्ताने करम की

ज़ह्रा है कली जिस में ह़ुसैन और ह़सन फूल[2]

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

सुब्ह़ के वक़्त को ग़नीमत जानिये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! सुब्ह़ के वक़्त को ग़नीमत जानिये कि हमारे अस्लाफ़ हमेशा वक़्त की क़द्र करते हुए नमाज़े फ़ज्र के बा'द इशराक़ व चाश्त तक के वक़्त का भी ख़ास ख़याल रखा करते और कोशिश फ़रमाते कि उन का येह वक़्त भी मस्जिद ही में गुज़रे, जैसा कि नवासए रसूल ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे ह़सन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के मुतअ़ल्लिक़ बयान हुवा कि **वोह नमाज़े फ़ज्र अदा फ़रमाने के बा'द सूरज तुलूअ़ होने तक मस्जिदे नबवी ही में तशरीफ़ फ़रमा रहते और अदाए मुस्त़फ़ा** को अदा करते कि **अल्लाह** के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का भी येही मा'मूले मुबारक था कि जब फ़ज्र की नमाज़ अदा फ़रमाते तो तुलूए़ आफ़्ताब तक नमाज़ पढ़ने की जगह

[1] .....تاریخ مدینہ دمشق، ۱۳۸۳ – حسن بن علی بن ابی طالب، ۲۴۱/۱۳

[2] .....ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 79

पर ही तशरीफ़ फ़रमा रहते ।[1] और एक रिवायत में है कि (इस के बा'द) आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم दो रक्अ़तें भी अदा फ़रमाया करते ।[2]

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मा'लूम हुवा नमाज़े फ़ज्र के बा'द तुलूए़ आफ़्ताब तक मस्जिद में बैठे रहना, हमारे मीठे मीठे आक़ा, मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ही सुन्नत नहीं बल्कि हमारे अस्लाफ़ का भी येही त़रीक़ा रहा है । जैसा कि इमामे अजल्ल ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अबू त़ालिब मक्की رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : बन्दा जहां (फ़ज्र की) नमाज़ पढ़े तो उसी जगह क़िब्ला रुख़ बैठा रहे और मुस्तह़ब येह है कि किसी से बात न करे या आ'माल व वज़ाइफ़ में मगन रहे । बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰى तुलूए़ फ़ज्र से ले कर तुलूए़ आफ़्ताब तक ख़ैरो भलाई के इ़लावा हर त़रह़ की बात करने को ना पसन्द करते थे, बल्कि बा'ज़ तो नेकी की दा'वत पर मब्नी बातों के इ़लावा हर क़िस्म की गुफ़्तगू को भी बुरा समझते थे । मज़ीद फ़रमाते हैं कि येह एक सुन्नत है, जो छोड़ दी गई है ।[3] ह़ालांकि इस वक़्त की फ़ज़ीलत के मुतअ़ल्लिक़ मरवी है : जो शख़्स सुब्ह़ के वक़्त मस्जिद में नेकी सीखने सिखाने के लिये जाए तो उसे पूरे उ़मरे का सवाब मिलेगा ।[4] और एक रिवायत में है कि उस के लिये ऐसे मुजाहिद का सवाब लिखा जाएगा जो ग़नीमत ह़ासिल कर के लौटता है ।[5]

---

[1] .....مسلم، کتاب المساجد و مواضع الصلاۃ، باب فضل الجلوس . . . الخ، ص ۲۴۳، حدیث: ۲۸۷

[2] .....قوت القلوب، الفصل السابع فی ذکر اوراد النہار، ۱/ ۳۲

[3] .....قوت القلوب، الفصل السادس فی ذکر عمل المرید بعد صلاۃ الغداۃ، ۱/ ۳۰

[4] .....مستدرک، کتاب العلم، من جاء المسجد لتعلم الخیر، ۱/۲۸۱، حدیث: ۳۱۷

[5] .....مصنف ابن ابی شیبہ، کتاب الزھد، ما جاء فی لزوم المساجد، ۸/۱۷۳، حدیث: ۷

बल्कि एक मरतबा **अल्लाह** करीम के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से इरशाद फ़रमाया : सुब्ह़ इस ह़ाल में करो कि या तो तुम आ़लिम हो या त़ालिबे इ़ल्म हो या उन की सोह़बत इख़्तियार करने वाले हो, इन के इ़लावा चौथे न बनना कि तुम हलाक हो जाओगे ।[1]

"मदनी ह़ल्क़ा" के 8 हुरूफ़ की निस्बत से बा'दे फ़ज्र ता इशराक़ मस्जिद में बैठने के मुतअ़ल्लिक़ आठ फ़रामीने मुस्त़फ़ा

《1》 ☞ जिस ने नमाज़े फ़ज्र बा जमाअ़त अदा की फिर तुलूए़ आफ़्ताब तक बैठ कर **अल्लाह** पाक का ज़िक्र किया फिर दो रक्अ़तें अदा कीं तो उसे एक कामिल ह़ज व उ़मरे का सवाब मिलेगा ।[2]

《2》 ☞ जो नमाज़े फ़ज्र के बा'द **इशराक़** की दो रक्अ़तें अदा करने तक अपनी जगह बैठा रहे और ख़ैर के इ़लावा कोई बात न कहे उस के गुनाह मुआ़फ़ कर दिये जाते हैं अगर्चे समुन्दर के झाग से ज़ियादा हों ।[3]

《3》 ☞ जो नमाज़े फ़ज्र अदा करने के बा'द अपनी जगह बैठा रहे और कोई दुन्यवी बात न करे और **अल्लाह** पाक का ज़िक्र करता रहे फिर चाश्त की

---

[1] .....دارمی، المقدمة، باب فی ذهاب العلم، ص۹۶، حدیث: ۲۵۴

[2] .....ترمذی، ابواب السفر، باب ماذکر مما یستحب من الجلوس. . .الخ، ص۱۷۱، حدیث: ۵۸۶

[3] .....ابوداود، کتاب الصلاة، باب صلاة الضحی، ص۲۱۱، حدیث: ۱۲۸۷

चार रक्अ़तें अदा करे तो गुनाहों से ऐसा पाको साफ़ हो जाएगा जैसा कि उस दिन था जिस दिन इस की मां ने इसे जना था कि इस पर कोई गुनाह न था।[1]

﴾4﴿ ☞ जिस ने फ़ज्र की नमाज़ अदा की फिर तुलूए़ आफ़्ताब तक **अल्लाह** पाक का ज़िक्र करता रहा फिर दो या चार रक्अ़तें अदा कीं उस के बदन को **जहन्नम की आग न छू सकेगी।**[2]

﴾5﴿ ☞ सय्यिदे आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने एक लश्कर नज्द की जानिब रवाना फ़रमाया तो वोह बहुत सारा माले ग़नीमत लिये जल्द लौट आया तो किसी ने कहा कि हम ने इस गुरौह से ज़ियादा जल्दी लौटने और कसरत से माले ग़नीमत लाने वाला लश्कर कभी नहीं देखा, इस पर हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : क्या मैं तुम्हें ऐसी क़ौम के मुतअ़ल्लिक़ न बताऊं जो इस से ज़ियादा माले ग़नीमत ह़ासिल कर के जल्द लौट आती है, येह वोह क़ौम है जो नमाज़े फ़ज्र में ह़ाज़िर होती है, फिर तुलूए़ आफ़्ताब तक बैठ कर ज़िक्रुल्लाह करती रहती है।[3]

﴾6﴿ ☞ जो शख़्स फ़ज्र की नमाज़ पढ़ने के बा'द अपनी जगह बैठ कर **अल्लाह** पाक का ज़िक्र करता है तो फ़िरिश्ते उस के लिये येह दुआ़ करते हैं : या **अल्लाह** ! इसे बख़्श दे, या **अल्लाह** इस पर रह़्म फ़रमा।[4]

---

[1] ..... مسند ابی یعلٰی، ۱۱۲ – مسند عائشة، ۳/۳۹۴، حدیث: ۴۳۶۴

[2] ..... شعب الایمان ۲۳ – باب فی الصیام، فصل فیمن فطر صائم، ۳/۴۲۰، حدیث: ۳۹۵۷

[3] ..... ترمذی، احادیث شتی، ۱۰۸ – باب، ص ۸۱۴، حدیث: ۳۵۶۱

[4] ..... مسند احمد، مسند العشرة المبشرین بالجنة، ۴ – مسند علی بن ابی طالب، ۱/۴۰۷، حدیث: ۱۲۶۴

﴾7﴿ ☞ जो शख़्स नमाज़े फ़ज्र पढ़े, फिर वहीं बैठ कर तुलूए आफ़्ताब तक **अल्लाह** पाक का ज़िक्र करे तो उस के लिये जन्नत वाजिब हो जाती है।[1]

﴾8﴿ ☞ मैं सुब्ह की नमाज़ अदा करूं फिर तुलूए आफ़्ताब तक वहीं बैठ कर ज़िक्रुल्लाह करूं, येह मुझे हर उस चीज़ से ज़ियादा पसन्द है जिस पर सूरज तुलूअ और ग़ुरूब होता है।[2]

महब्बत में अपनी गुमा या इलाही — न पाऊं मैं अपना पता या इलाही
मैं बेकार बातों से बच के हमेशा — करूं तेरी हम्दो सना या इलाही[3]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

सुन्नत को ज़िन्दा करने की कोशिश

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अफ़्सोस ! सद अफ़्सोस ! एक ता'दाद है जो हुब्बे दुन्या की मस्ती में सरशार, फ़िक्रे आख़िरत से ग़ाफ़िल और हर वक़्त मालो दौलत बढ़ाने के सुहाने ख़्वाब देखने में मसरूफ़ है। बारगाहे ख़ुदावन्दी से इश्क़े रसूल की ला ज़वाल दौलत मांगने के बजाए नफ़्सो शैतान के हाथों में खिलोना बने बैठे हैं। जिधर देखिये ! बस नफ़्सा नफ़्सी का ही आ़लम है, चुनान्चे इस पुर फ़ितन दौर में पन्दरहवीं सदी की अ़ज़ीम इ़ल्मी व रूहानी शख़्सिय्यत, शैख़े त़रीक़त, अमीरे अह्ले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के ज़ेरे सर परस्ती तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी उन सुन्नतों को जिन पर फ़ी ज़माना अ़मल

[1] ..... مسند ابی یعلی، ۵۵–مسند معاذ ابن انس، ۲/۲۳، حدیث: ۱۴۸۸

[2] ..... مصنف عبد الرزاق، کتاب الصلاۃ، باب الرجل یصلی الصبح . . . الخ، ۱/۳۹۲، حدیث: ۲۰۳۱

[3] .....वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 105 मुल्तक़त़न

छोड़ दिया गया है, ज़िन्दा करने की कोशिश में मसरूफ़े अ़मल है। दीगर मदनी कामों के साथ साथ इस के पेशे नज़र बा'दे फ़ज्र ता इशराक़ का वक़्त भी है और इस वक़्त को सुन्नत के मुत़ाबिक़ कार आमद बनाने के लिये दा'वते इस्लामी ने इस में अपने ज़ैली ह़ल्क़े के 12 मदनी कामों में से एक मदनी काम बनाम **बा'दे फ़ज्र मदनी ह़ल्क़ा** शुरूअ़ कर रखा है। **बा'दे फ़ज्र ता इशराक़ व चाश्त** के वक़्त को भी दुरुस्त इस्ति'माल करने और इस वक़्त में ज़िक्रुल्लाह (तिलावते क़ुरआन, तर्जमा व तफ़्सीर, इ़ल्मे दीन से माला माल दर्से फ़ैज़ाने सुन्नत वग़ैरा) कर के दुन्या व आख़िरत की बरकतों को समेटने के लिये दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल ने बहुत प्यारे अन्दाज़ में हमारी राहनुमाई की है। दुन्या भर की हज़ारहा मसाजिद में आ़शिक़ाने रसूल को इस की तरग़ीब दिलाई जाती है और बा क़ाइदा मुनज़्ज़म अन्दाज़ से जदवल व मदनी मर्कज़ के त़रीक़े कार के मुत़ाबिक़ येह वक़्त गुज़ारने या'नी **बा'दे फ़ज्र मदनी ह़ल्क़ा** लगाने की कोशिश की जाती है।

बा'दे फ़ज्र मदनी हल्क़ा क्या है ?

दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल में **बा'दे फ़ज्र मदनी ह़ल्क़ा** से मुराद येह है कि रोज़ाना बा'दे फ़ज्र ता इशराक़ व चाश्त क़ुरआने पाक से तीन आयात की तिलावत मअ़ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान शरीफ़ और तफ़्सीरे **सिरात़ुल जिनान / ख़ज़ाइनुल इरफ़ान / नूरुल इरफ़ान** से उन्ही आयात की तफ़्सीर देख कर सुनाई जाती हैं और इस के साथ साथ फ़ैज़ाने सुन्नत के तरतीब वार 4 सफ़ह़ात और मन्ज़ूम शजरह शरीफ़ पढ़ने के बा'द दुआ़ की भी तरकीब होती है। (बेहतर है कि निगराने ज़ैली ह़ल्क़ा मुशावरत / ज़ैली ज़िम्मेदार मदनी इन्आ़मात / जामिअ़तुल मदीना के मुदर्रिसीन व त़लबए

किराम / मद्रसतुल मदीना लिल बनीन / मद्रसतुल मदीना ऑन लाइन के नाज़िमीन व क़ारी साहिबान भी **बा'दे फ़ज्र मदनी हल्क़ा** लगाएं ।)

तन्ज़ीमी तौर पर मदनी हल्क़ा किस के ज़िम्मे है ?

तन्ज़ीमी तौर पर **बा'दे फ़ज्र मदनी हल्क़ा** लगाना और इस का एहतिमाम करना **मजलिसे मदनी इन्आमात** के ज़िम्मेदारान के सिपुर्द है ।

मदनी हल्क़े का तरीक़ा

नमाज़े फ़ज्र की दुआ के बा'द मुबल्लिग़ इस्लामी भाई मस्जिद के एक तरफ़ मदनी हल्क़े की इस तरह तरकीब फ़रमाएं :

❁ तीन बार इस तरह ए'लान फ़रमाइये : **क़रीब क़रीब तशरीफ़ लाइये ।** पर्दे में पर्दा किये दो ज़ानू बैठ कर इस तरह इब्तिदा कीजिये :

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

❁ इस के बा'द इस तरह दुरूदो सलाम पढ़ाइये :

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰه وَعَلٰى اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ يَاحَبِيْبَ اللّٰه
اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا نَبِيَّ اللّٰه وَعَلٰى اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ يَا نُوْرَ اللّٰه

❁ फिर इस तरह ए'तिकाफ़ की निय्यत करवाइये : نَوَيْتُ سُنَّتَ الْاِعْتِكَاف (तर्जमा : मैं ने सुन्नत ए'तिकाफ़ की निय्यत की) ।

❁ 3 आयात की तिलावत मअ़ **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान** और **सिरातुल जिनान** / **ख़ज़ाइनुल इरफ़ान** / **नूरुल इरफ़ान** से देख कर उन की तफ़्सीर बयान की जाए ।

❁ अगर **सिरातुल जिनान** में किसी मक़ाम पर तफ़्सीर त़वील हो तो आ़म तौ़र पर 3 आयात के मुत़ाबिक़ जिस क़दर सफ़ह़ात बनते हों उसी क़दर पढ़ लीजिये।

❁ फिर दोबारा ख़ुत़्बा पढ़े बिग़ैर फ़ैज़ाने सुन्नत के तरतीब वार 4 सफ़ह़ात पढ़ कर सुनाइये।

❁ इस के बा'द इजतिमाई तौ़र पर शजरए क़ादिरिय्या रज़विय्या अ़त्तारिय्या (मन्ज़ूम) पढ़ा जाए। (चाहे त़र्ज़ में पढ़ें या बिग़ैर त़र्ज़ के)

❁ इशराक़ व चाश्त में अगर कुछ वक़्त बाक़ी हो तो शजरह शरीफ़ के अवरादो वज़ाइफ़ की तरकीब बना ली जाए।

❁ इशराक़ व चाश्त का वक़्त[1] शुरूअ़ होते ही नमाज़े इशराक़ व चाश्त अदा की जाए और मुख़्तसर दुआ़ की जाए।

❁ आख़िर में मुबल्लिग़ इस्लामी भाई सब से ख़न्दा पेशानी से मुलाक़ात करें।

मदनी हल्क़ा मस्जिद में लगाने की हिक्मत

मस्जिद **अल्लाह** पाक का मुबारक घर है, जिस में मुसलमान अपने करीम व रह़ीम रब की बारगाह में सज्दा रेज़ होते हैं, जब कोई शख़्स इस में दाख़िल होता है तो बहुत सारे गुनाहों से बच जाता है, ब ज़ाहिर इस का

[1].....सूरज तुलूअ़ होने के कम अज़ कम 20 या 25 मिनट बा'द से ले कर ज़ह्वए कुब्रा तक नमाज़े इशराक़ का वक़्त रहता है। जब कि नमाज़े चाश्त का वक़्त आफ़्ताब बुलन्द होने से ज़वाल या'नी निस्फ़ुन्नहारे शरई तक है और बेहतर येह है कि चौथाई दिन चढ़े पढ़े। (बहारे शरीअ़त, सुननो नवाफ़िल का बयान, 1 / 676) नमाज़े इशराक़ के फ़ौरन बा'द भी चाहें तो नमाज़े चाश्त पढ़ सकते हैं। (मदनी पंज सूरह, 277-278 मुल्तक़त़न)

दुन्या से तअ़ल्लुक़ ख़त्म हो जाता है और शैत़ान के वार का ज़ोर भी कम हो जाता है, जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन मा'क़िल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : शैत़ान से बचने के लिये मस्जिद एक मज़्बूत़ क़ल्आ़ है।[1] और मस्जिद में यादे इलाही करने वालों से **अल्लाह** पाक ख़ुश होता है और उन पर नूर की रह़मत बरसती है। एक रिवायत में है : जो मुसलमान मस्जिद को नमाज़ और ज़िक्र के लिये ठिकाना बना लेता है तो **अल्लाह** पाक उस की त़रफ़ रह़मत की नज़र फ़रमाता है।[2]

अस्लाफ़ के मदनी ह़ल्क़े

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हमारे अस्लाफ़ (या'नी बुज़ुर्गों) की आ़दते मुबारका थी कि वोह बा'दे फ़ज्र मस्जिद में ही तशरीफ़ फ़रमा हो जाते और अपने अवरादो वज़ाइफ़ में मसरूफ़ रहते या फिर दर्स व तदरीस में मश्ग़ूल हो जाते। आइये ! चन्द एक बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِيْن के बा'दे फ़ज्र के मा'मूलात मुलाह़ज़ा करते हैं :

﴾1﴿ इमामे आ'ज़म का मा'मूल

सिराजुल उम्मह, काशिफ़ुल ग़ुम्मह[3] ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा नो'मान बिन साबित رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه की पूरी ज़िन्दगी दीने इस्लाम की ख़िदमत में गुज़री, आप के शागिर्दों ने इस्लामी ता'लीमात की ह़क़ीक़त को

[1] ..... مصنف ابن ابی شیبہ، کتاب الزھد، ماجاء فی لزوم المساجد...۸/۱۷۲، حدیث:۴

[2] ..... ابن ماجہ، کتاب المساجد...الخ، باب لزوم المساجد...الخ، ص۱۳۶، حدیث:۸۰۰

[3] .....उम्मत के चराग़ और मुब्हम व पेचीदा मुआ़मलात को खोलने वाले।

उजागर किया और उन को फैलाने में दिन रात मसरूफ़ रहे, आप के दर्स का सिलसिला नमाज़े फ़ज्र के फ़ौरन बा'द शुरूअ़ हो जाता और पूरा दिन जारी रहता, सिर्फ़ नमाज़ वग़ैरा के लिये वक़्फ़ा होता।[1]

हो नाइबे सरवरे दो आ़लम, इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा — सिराजे उम्मत फ़क़ीहे अफ़्ख़म, इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा

जो बे मिसाल आप का है तक़्वा, तो बे मिसाल आप का है फ़त्वा — हैं इ़ल्मो तक़्वा के आप संगम, इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा[2]

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾2﴿ इमाम शाफ़ेई का मा'मूल

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू अ़ब्दुल्लाह मुह़म्मद बिन इदरीस शाफ़ेई رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने भी अपनी ज़िन्दगी दीने इस्लाम की ख़िदमत के लिये वक़्फ़ कर रखी थी, तस्नीफ़ो तालीफ़[3] के साथ साथ दर्सो तदरीस से भी बे पनाह मह़ब्बत थी कि सुब्ह़ होते ही उसी काम में मश्ग़ूल हो जाते और सुब्ह़ की नमाज़ के बा'द ही दर्स शुरूअ़ करने लगते।[4]

﴾3﴿ इमाम वकीअ़ का मा'मूल

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम वकीअ़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ साइमुद्दह्र थे, (या'नी

[1] .....اخبار ابی حنیفہ، ذکر ما روی فی تھجدہ...الخ، ص ۵۳ مفھوماً

[2] .....वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 573 मुल्तक़त़न

[3] .....तस्नीफ़ का मत़लब किताब लिखना और मज़मून बनाना है जब कि तालीफ़ मुख़्तलिफ़ किताबों से मज़ामीन चुन कर नए पैराए में तरतीब देने को कहते हैं।

(फ़ीरोज़ुल्लुग़ात, स. 339-362)

[4] .....مناقب الشافعی للبیھقی، باب ما یؤثر من خضاب الشافعی...الخ، ۲/۲۸۵ ملتقطاً

ईदैन व अय्यामे तशरीक़ के इलावा 12 माह रोज़ा रखते थे) सुब्ह सवेरे ह़दीस शरीफ़ का दर्स देते, जब दिन चढ़ जाता तो घर तशरीफ़ ले जाते।[1]

﴾4﴿ दमिश्क़, हिम्स, मक्का और बसरा वालों का त़रीक़ा

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़र्ब رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : मैं ने दमिश्क़, ह़िम्स, मक्का और बसरा वालों को देखा कि वोह सुब्ह की नमाज़ के बा'द इजतिमाई त़ौर पर कुरआने करीम पढ़ने के लिये जम्अ़ होते हैं, अलबत्ता ! मक्का व बसरा वाले जब जम्अ़ होते हैं तो उन का त़रीक़े कार येह होता है कि एक शख़्स 10 आयात पढ़ता है और बाक़ी लोग ख़ामोशी से सुनते हैं फिर दूसरा शख़्स पढ़ता है और लोग ख़ामोशी से सुनते हैं, येह सिलसिला यूंही जारी रहता है यहां तक कि सब अपनी अपनी बारी पर 10-10 आयात पढ़ लेते हैं।[2]

﴾5﴿ पीर मेह्र अ़ली शाह رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का मा'मूल

ह़ज़रते सय्यिदुना पीर सय्यिद मेह्र अ़ली शाह رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه (मुतवफ़्फ़ा 29 सफ़रुल मुज़फ़्फ़र 1356 हिजरी ब मुत़ाबिक़ 11 मई 1937 ईसवी) के मुतअ़ल्लिक़ मरवी है : नमाज़े फ़ज्र की अदाएगी के बा'द आयतुल कुरसी, سُبْحٰنَ اللّٰه, اَلْحَمْدُ لِلّٰه और اَللّٰهُ اَكْبَر पढ़ कर दुआ़ मांगा करते थे, फिर ज़िक्रे जह्र (या'नी बुलन्द आवाज़ से ज़िक्र)[3] फ़रमाते और तीन चार बार कलिमा

[1] .....تاریخ بغداد، باب الواو، ذکر من اسمہ وکیع، ۷۳۳۲-وکیع بن جراح، ۱۳/۴۷۶

[2] .....جامع العلوم والحکم، الحدیث السادس والثلاثون، ص ۳۵۲ ملتقطًا

[3].....बुलन्द आवाज़ से ज़िक्र करना जाइज़ है मगर येह एह़तियात़ पेशे नज़र रहे कि सोते हुए लोगों की नींद में ख़लल न आए या मरीज़, नमाज़ी या तिलावत करने वाले को तशवीश न हो। (बुन्यादी अ़क़ाइद और मा'मूलाते अह्ले सुन्नत, स. 113-114 मुल्तक़त़न ब तग़य्युरिन क़लील)

शरीफ़ पढ़ कर दोबारा दुआ फ़रमाते, फिर मुकर्रर ज़िक्र कलिमा शरीफ़ बिल जह्र फ़रमा कर तीसरी दफ़्आ दुआ मांगा करते, इस के बा'द आ़दते मुबारक थी कि 10 बजे तक अवरादो वज़ाइफ़ में मश्ग़ूल रहते, कभी येह शग़्ल मस्जिद में ही अदा होता और कभी हुजरा शरीफ़ में, इस शग़्ल के दौरान किसी के साथ कलाम नहीं फ़रमाते थे।[1]

﴾6﴿ हुज़ूर मुह़द्दिसे आ'ज़म का मा'मूल

हुज़ूर मुह़द्दिसे आ'ज़म पाकिस्तान ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती सरदार **अह़मद चिश्ती क़ादिरी** رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه (मुतवफ़्फ़ा यकुम शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म 1382 हिजरी ब मुत़ाबिक़ 1962 ईसवी) फ़ज्र का वक़्त शुरूअ़ होने से पहले बेदार होते और ज़रूरिय्यात से फ़ारिग़ हो कर ज़िक्र व मुनाजात में मसरूफ़ हो जाते, शाही मस्जिद में नमाज़े बा जमाअ़त तक्बीरे ऊला के साथ अदा करते और सुब्ह़ से दोपहर तक फिर ज़ोहर से अ़स्र तक पढ़ाते रहते।[2]

﴾7﴿ मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का मा'मूल

मश्हूर मुफ़स्सिरे क़ुरआन, ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के मा'मूलात में भी सुब्ह़ का दर्स शामिल था, आप नमाज़े फ़ज्र से फ़ारिग़ हो कर आधा घन्टा क़ुरआने करीम का और 15 मिनट मिश्कात शरीफ़ का दर्स देते थे।[3]

1.....फ़ैज़ाने पीर मेह्र अ़ली शाह, स. 16
2.....फ़ैज़ाने मुह़द्दिसे आ'ज़म, स. 22
3.....ह़ालाते ज़िन्दगी ह़कीमुल उम्मत...इलख़, स. 180 ब तसर्रुफ़

मदनी हल्क़े के 4 मा'मूलात की वज़ाहत

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मदनी हल्क़ा इन 4 क़िस्म के मा'मूलात पर मुश्तमिल है : ❁ 3 आयात की तिलावत, तर्जमा व तफ़्सीर ❁ फ़ैज़ाने सुन्नत के तरतीब वार 4 सफ़हात का दर्स ❁ मन्ज़ूम शजरह शरीफ़ ❁ और दुआ

आइये ! अब इन चारों मा'मूलात के मुतअ़ल्लिक़ मुख़्तसरन जानते हैं :

1- तीन आयात की तिलावत, तर्जमा व तफ़्सीर

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जिस ज़माने में क़ुरआने करीम अ़रबी ज़बान में नाज़िल हुवा, उस वक़्त अ़रबी की फ़साहतो बलाग़त[1] के माहिरीन मौजूद थे, वोह इस के ज़ाहिर और इस के अह़काम को तो जानते थे लेकिन इस की बातिनी बारीकियां उन पर भी ग़ौरो फ़िक्र करने और नबिये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से सुवालात करने के बा'द ही ज़ाहिर होती थीं। जैसा कि जब येह आयते मुबारका नाज़िल हुई :

اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَلَمْ يَلْبِسُوْۤا اِيْمَانَهُمْ بِظُلْمٍ (پ۷، الانعام: ۸۲)

तो सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में अ़र्ज़ की : हम में से ऐसा कौन है जो अपनी जान पर ज़ुल्म नहीं करता। आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इस की तफ़्सीर बयान की, कि यहां ज़ुल्म से मुराद शिर्क है और इस पर इस आयत اِنَّ الشِّرْكَ لَظُلْمٌ عَظِيْمٌ ﴿۱۳﴾ (پ۲۱، لقمان: ۱۳) से इस्तिद्लाल फ़रमाया।

---

[1]....कलाम में ऐसे अल्फ़ाज़ लाना जो रोज़ मर्रा और मुह़ावरे के ख़िलाफ़ न हों और मौक़अ़ व मह़ल के मुत़ाबिक़ हों, **फ़साहत** कहलाता है। (फ़ीरोज़ुल्लुग़ात, स. 993) जब कि कलाम में इन्तिहाई दरजे तक पहुंचना और ह़स्बे मौक़अ़ गुफ़्तगू करने को **बलाग़त** कहते हैं। (फ़ीरोज़ुल्लुग़ात, स. 212)

(**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** जब मैदाने फ़साहतो बलाग़त के शहसुवारों को कुरआन के मआनी समझने के लिये अल्फ़ाज़े कुरआनी की तफ़्सीर की हाजत हुई) तो हम तो उस चीज़ के ज़ियादा मोहताज हैं, जिस की उन्हें ज़रूरत पड़ी बल्कि हम तो सब लोगों से ज़ियादा इस चीज़ के मोहताज हैं क्यूंकि हमें बिग़ैर सीखे लुग़त के मआनी व मफ़ाहीम और इस के मरातिब मा'लूम नहीं हो सकते।[1] चुनान्चे, जो लोग कुरआने करीम पढ़ते हैं मगर उस की तफ़्सीर नहीं जानते उन की मिसाल उन लोगों की त़रह़ है जिन के पास रात के वक़्त बादशाह का ख़त़ आया लेकिन उन के पास चराग़ न था कि जिस की रोशनी में वोह उस ख़त़ को पढ़ सकते, लिहाज़ा वोह परेशान हो गए कि मा'लूम नहीं इस में क्या लिखा है ? जब कि जो शख़्स कुरआन पढ़ता है और उस की तफ़्सीर जानता है उस की मिसाल उस शख़्स जैसी है जो चराग़ ले आए ताकि वोह उस की रोशनी में पढ़ सके कि ख़त़ में क्या लिखा है।[2] चुनान्चे,

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हमें तिलावते कुरआन के साथ साथ मुस्तनद तफ़ासीर के ज़रीए मआनिये कुरआन भी समझने की कोशिश करनी चाहिये और **बा'दे फ़ज्र मदनी हल्क़ा** इस का बहुत ही आसान ज़रीआ है। क्यूंकि इस में रोज़ाना तीन आयात की तिलावत, तर्जमा व तफ़्सीर सुनने से **शुरकाए मदनी हल्क़ा** के दिल में जहां **अल्लाह** पाक और उस के रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मह़ब्बत पैदा होती है वहीं उन्हें कुरआन फ़हमी की ने'मत भी मुयस्सर आती है कि जिस की फ़ज़ीलत बयान करते हुए **अल्लाह**

[1] ..... الاتقان، النوع السابع والسبعون، فصل واما وجه الحاجة... الخ، ص ۵۷۰، ملخصًا

[2] ..... تفسیر قرطبی، باب ما جاء فی فضل تفسیر القرآن واهله، الجزء الاول، ۱/۳۵

करीम के महबूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : सुब्ह के वक़्त **किताबुल्लाह** की एक आयत सीखना 100 रक्अत नफ़्ल अदा करने से बेहतर है और सुब्ह के वक़्त इल्म का कोई बाब सीखना ख़्वाह उस पर अमल किया जाए या न किया जाए एक हज़ार रक्अत नफ़्ल अदा करने से बेहतर है।[1]

2- फ़ैज़ाने सुन्नत के 4 सफ़्हात पढ़ना व सुनना

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! फ़ैज़ाने सुन्नत के तरतीब वार 4 सफ़्हात पढ़ना व सुनना भी बा'दे फ़ज्र मदनी हल्क़े का एक अहम जुज़्व है, **याद रखिये !** इस वक़्त (या'नी फ़ज्र के बा'द) **फ़ैज़ाने सुन्नत** के इलावा किसी और किताब के 4 सफ़्हात पढ़ने की तन्ज़ीमी तौर पर इजाज़त नहीं, اَلْحَمْدُ لِلّٰه **फ़ैज़ाने सुन्नत** बयक वक़्त मसाइले शरइय्या की निशानदेही के साथ साथ तसव्वुफ़ व हिक्मत के लिये भी मुफ़ीद है। दरजनों मौज़ूआत पर पेश कर्दा आयाते क़ुरआनी, अहादीसे नबवी व अक़्वाले अकाबिरीन के साथ साथ दिलचस्प हिकायात ने इस किताब के हुस्न में मज़ीद इज़ाफ़ा कर दिया है। जब से येह किताब मन्ज़रे आम पर आई है, इस ने ब तदरीज इशाअत के रेकॉर्ड क़ाइम किये हैं, 2006 ईसवी से ले कर ता दमे तहरीर येह सिर्फ़ उर्दू ज़बान में 12 इशाअतों (Editions) में कमो बेश 268000 (दो लाख अड़सठ हज़ार) की ता'दाद में शाएअ हो चुकी है, जब कि उर्दू के इलावा हिन्दी, गुजराती, सिन्धी, बंगाली और इंगलिश ज़बानों में इस के तराजिम की इशाअत भी जारी है। इस किताब के मुतअल्लिक़ अपने ख़यालात का इज़हार करते हुए शैखुल हदीस हज़रते अल्लामा व मौलाना ख़्वाजा मुज़फ़्फ़र हुसैन साहिब رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते

[1] ..... ابن ماجه، المقدمة، باب فضل من تعلم القرآن وعلمه، ص۴۸، حديث: ۲۱۹ بتغير قليل

हैं : कुरआने करीम जो कि एक मुकम्मल ज़ाबित़ए ह़यात है जिस में सिराते मुस्तक़ीम की हिदायत के लिये जा बजा **अम्र व नही** की शम्अ़ रोशन कर दी गई है और لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِيْ رَسُوْلِ اللّٰهِ اُسْوَةٌ حَسَنَةٌ (پ ۲۱، الاحزاب:۲۱) (**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** बेशक तुम्हें रसूलुल्लाह की पैरवी बेहतर है ।) फ़रमा कर एक बेहतरीन नमूनए अ़मल की निशान देही कर के उन की पैरवी को जुज़्वे ह़यात क़रार दिया गया है, या'नी कुरआने करीम एक किताब है और हुज़ूर सरापा नूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के क़ौलो फ़े'ल गोया इस किताब की अ़मली तफ़्सीर है, जिस पर अ़मल कर के इन्सान ख़ाक से बुलन्द हो कर मलकूती (फ़िरिश्तों जैसी) सिफ़ात का ह़ामिल बन जाता है, **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के येह अक़्वाल व अफ़्आ़ल जिन्हें सुन्नत कहते हैं, अह़ादीसे करीमा, अक़्वाले मशाइख़ और उ़लमाए किराम की किताबों में फैले हुए थे । हज़ारों हज़ार फ़ज़्लो करम की बरसात हो अमीरे अह्ले सुन्नत, बानी व अमीरे दा'वते इस्लामी आ़शिक़े मदीना ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه पर कि उन्हों ने इन ला'लो जवाहिर और गोहर पारों को चुन चुन कर यक्जा फ़रमा दिया और **फ़ैज़ाने सुन्नत** के ह़सीन नाम से मौसूम कर के यादे नबी में धड़कने वाले दिलों की ख़िदमत में पेश फ़रमाया, ज़बान व बयान की रवानी और त़र्ज़े तह़रीर की शीरीनी के साथ जब येह किताब सामने आई तो लोग इसे बरसती आंखों और तरसते दिलों के साथ पढ़ने और इस पर अ़मल करने लगे ।

बन्दए नाचीज़ ख़ुद भी इस किताब से इतना मुतअस्सिर हुवा कि जब इस का पहला एडीशन मुझे मिला तो बा वुज़ू भीगी आंखों से रिह़्ल पर रख कर पढ़ता रहा और बार बार पढ़ता रहा और अब तो येह जदीद एडीशन

कुछ और ही ख़ूबियों के साथ बन संवर कर सामने आया है, ह़वाला जात से मुरस्सअ़, तख़रीजात से आरास्ता और मज़ीद इज़ाफ़ात से सजा हुवा है। नीज़ इस किताब की एक ख़ास और उछूती ख़ूबी येह है कि इस में जगह ब जगह तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी के सुन्नतों की तरबियत के मदनी क़ाफ़िलों की ईमान अफ़रोज़ मदनी बहारें अपनी ख़ुश्बूएं लुटा रही हैं। मेरी मा'लूमात के मुत़ाबिक़ कसीरुल इशाअ़त होने के ए'तिबार से येह पहली उर्दू किताब है जो पाकिस्तान में छपी और फिर देखते ही देखते दुन्या के कई **ममालिक** में पहुंच गई। सुनने में आया है कि दा'वते इस्लामी में ऐसे ऐसे दीवाने भी हैं कि तक़रीबन 1550 (साढ़े पन्दरह सो) सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **फ़ैज़ाने सुन्नत** (जिल्द अव्वल) इन में से किसी ने 12 दिन में तो किसी ने फ़क़त़ 7 अय्याम में मुकम्मल पढ़ ली, इस बात से इस किताबे मुस्तत़ाब की ख़ूबियों और तह़रीरे दिलपज़ीर की चाशनियों का ब ख़ूबी अन्दाज़ा लगाया जा सकता है, मेरी अपील है कि लोग इसे ख़रीद कर अपने घर के हर त़ाक़ पर सजाए रखें ताकि जहां से जी चाहे इसे ह़ासिल कर के पढ़ते रहें। दोस्तों को बत़ौरे तोह़्फ़ा ख़रीद कर पेश करें, बहन बेटी की शादी के मौक़अ़ पर बत़ौरे जहेज़ इस किताब को इनायत करें, बिल ख़ुसूस अह्ले सरवत इस किताब को ख़रीद कर मसाजिद, मदारिस और ख़ानक़ाहों में वक़्फ़ करें, तमाम मुबल्लिग़ीन व मुबल्लिग़ाते दा'वते इस्लामी और अ़वामो ख़वास भी इस का दर्स घर घर, मस्जिद मस्जिद, दुकान दुकान, कारख़ानों, बाज़ारों और चौकों पर जारी करें।

ह़दीस शरीफ़ में आया है कि जो हमारी तर्क शुदा किसी सुन्नत को राइज करे उस के लिये 100 शहीदों का सवाब है, आइये तर्क शुदा सुन्नतों पर

अ़मल करने और इन को राइज करने का अ़ह्द करें और इस अ़ह्द को निबाह कर 100 शहीदों का नहीं बल्कि हज़ारों शहीदों का सवाब ह़ासिल करें।[1]

फ़ैज़ाने सुन्नत जिल्द अव्वल में क्या कुछ है ?

1548 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल फ़ैज़ाने सुन्नत जिल्द अव्वल शैख़े त़रीक़त, अमीरे अह्ले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की लिखी हुई अ़ज़ीम किताब है, जिस के 4 अब्वाब हैं : **फ़ैज़ाने बिस्मिल्लाह, आदाबे त़आ़म, पेट का कुफ़्ले मदीना और फ़ैज़ाने रमज़ान।**

❀ **पहला बाब "फ़ैज़ाने बिस्मिल्लाह"** बिस्मिल्लाह पढ़ने के फ़ज़ाइल, जिन्नात से सामान की ह़िफ़ाज़त का त़रीक़ा, बुख़ार के 5 मदनी इ़लाज, दर्दे सर के 7 इ़लाज, ख़्वाब बयान करने के दलाइल वग़ैरा पर मुश्तमिल है।

❀ **दूसरा बाब "आदाबे त़आ़म"** खाने की सुन्नतें और आदाब के साथ साथ हाथ से खाने के त़िब्बी फ़वाइद, टेक लगा कर खाने के त़िब्बी नुक़्सानात, जिन्नात लीमूं से घबराते हैं, रंग बरंगी 99 ह़िकायात, मर्ह़ूम निगराने शूरा ह़ाजी मुह़म्मद मुश्ताक़ अ़त्तारी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के मुख़्तसर ह़ालाते ज़िन्दगी और जा नशीने अमीरे अह्ले सुन्नत, शहज़ादए अ़त्तार अल ह़ाज अबू उसैद ह़ज़रते मौलाना उ़बैद रज़ा अ़त्तारी मदनी مُدَّظِلُّهُ الْعَالِى को अमीरे अह्ले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की जानिब से लिखे गए एक मक्तूब (ख़त़) वग़ैरा पर मुश्तमिल है।

❀ **तीसरा बाब "पेट का कुफ़्ले मदीना"** भूक के फ़ज़ाइल के साथ साथ

[1]....फ़ैज़ाने सुन्नत, तक़रीज़े जलील, जिल्द अव्वल, स. iii

52 हिकायात पर मुश्तमिल है। ❀ **चौथा बाब "फ़ैज़ाने रमज़ान"** फ़ज़ाइले रमज़ान के साथ साथ तरावीह, लैलतुल क़द्र, ए'तिकाफ़, ईदुल फ़ित्र के फ़ज़ाइल और नफ़्ल रोज़ों के फ़ज़ाइल, रोज़ादारों की हिकायात और ए'तिकाफ़ करने वालों की 41 मदनी बहारों पर मुश्तमिल है।

फ़ैज़ाने सुन्नत जिल्द दुवुम में क्या कुछ है ?

फ़ैज़ाने सुन्नत जिल्द दुवुम के ता दमे तहरीर दो अब्वाब शाएअ़ हो चुके हैं : **ग़ीबत की तबाहकारियां** और **नेकी की दा'वत हिस्सा अव्वल**।

❀ **पहला बाब "ग़ीबत की तबाहकारियां"** इस में मुतफ़र्रिक़ मौज़ूआ़त पर मसलन बाप के बारे में, बेटे के बारे में, मां की त़रफ़ से बेटी की, छोटे बच्चे की, सुसराली रिश्तों की, पड़ोसियों की, मरीज़ों की, मरने वाले मुसलमान की, डॉक्टर की, ड्राईवर, सुवारी और सुवार की, मे'मार व मज़दूर की, होटल वाले की, मकान व साहिबे मकान की, उ़लमा की, ताजिरों की, मुलाज़िमीन की ग़ीबतों, खाने और बोलने से मुतअ़ल्लिक़, किसी को सुस्त वग़ैरा कहने के मुतअ़ल्लिक़, लिबास के मुतअ़ल्लिक़, ख़ानदान के मुतअ़ल्लिक़, परेशान ह़ालों के मुतअ़ल्लिक़, मुख़्तलिफ़ कारीगरों के मुतअ़ल्लिक़, किसी का फ़ोन आने या न आने की सूरत में, Sms, Chatting और Internet के ह़वाले से की जाने वाली ग़ीबतों की 1800 से ज़ाइद मिसालें मज़कूर हैं। नीज़ इस में ग़ीबत की बे शुमार तबाहकारियों की तफ़्सील के इ़लावा बा'ज़ दीगर मोहलिकात (या'नी हलाक कर देने वाली बातों) का भी मुख़्तसरन तज़किरा है। ❀ **दूसरा बाब "नेकी की दा'वत (हिस्सा अव्वल)"** अगर्चे येह बाब नेकी की दा'वत की ज़रूरत व अहम्मिय्यत, फ़ज़ीलत और तर्क करने के नुक़्सानात जैसे अहम

मौज़ूआ़त पर मुश्तमिल है, मगर ज़िम्नन रियाकारी की मिसालों और उस के इ़लाज के इ़लावा क़सम और उस के कफ़्फ़ारे के बयान वग़ैरा जैसी अहम मा'लूमात भी इस में बयान की गई हैं। नीज़ येह बाब तक़रीबन 125 क़ुरआनी आयात, मदनी आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के 249 इरशादात, 113 इ़ब्रत अंगेज़ ह़िकायात, 51 मदनी बहारों और मुख़्तलिफ़ मौज़ूआ़त पर सेंकड़ों मदनी फूलों से मुज़य्यन है।

फ़ैज़ाने सुन्नत के मुतअ़ल्लिक़ चन्द मुफ़ीद बातें

❀ फ़ैज़ाने सुन्नत को बहुत आसान अन्दाज़ में लिखने की कोशिश की गई है ताकि कम पढ़े लिखे इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें भी ब आसानी समझ सकें। ❀ फ़ैज़ाने सुन्नत मुबल्लिग़ीन व मुबल्लिग़ात के साथ साथ, उ़लमा व वाइ़ज़ीन, ख़ुत़बा व मुक़र्रिरीन, मुसन्निफ़ीन वग़ैरा के लिये यक्सां त़ौर पर मुफ़ीद है। ❀ फ़ैज़ाने सुन्नत का जो ख़ुश नसीब इस्लामी भाई या इस्लामी बहन कम अज़ कम 40 दिन रोज़ाना दो दर्स दे, उस के लिये अमीरे अह्ले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की जानिब से इस पूरी किताब का सवाब ईसाल किया गया है। ❀ फ़ैज़ाने सुन्नत जिल्द अव्वल को जो ख़ुश नसीब इस्लामी भाई या इस्लामी बहन 163 दिन के अन्दर अन्दर मुकम्मल पढ़ ले, उस के लिये **अल्लाह** पाक के वली, अमीरे अह्ले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की जानिब से ईमान पर इस्तिक़ामत, सकरात में नबिये रह़मत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत, क़ब्रो ह़श्र में राह़त, बे ह़िसाब मग़फ़िरत और जन्नतुल फ़िरदौस में मदनी ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का पड़ोस मिलने की दुआ़ है। ❀ फ़ैज़ाने सुन्नत जिल्द अव्वल और जिल्द दुवुम के दोनों अब्वाब अलग अलग मक्तबतुल मदीना से हदियतन ह़ासिल किये जा सकते हैं। ❀ फ़ैज़ाने सुन्नत जिल्द अव्वल मुकम्मल और जिल्द दुवुम के दोनों अब्वाब बल्कि, हर बाब अ़लाह़दा

अ़लाह़दा दा'वते इस्लामी की वेब साइट www.dawateislami.net से मुफ़्त पढ़ा जा सकता है, नीज़ डाऊन लोड और प्रिन्ट आऊट भी किया जा सकता है। ❀ फ़ैज़ाने सुन्नत जिल्द अव्वल मुकम्मल या इस के मुख़्तलिफ़ अब्वाब अगर मुख़य्यर इस्लामी भाई अपने मर्ह़ूमीन के ईसाले सवाब के लिये ख़रीद कर मसाजिद व मदारिस, दफ़्तिर व कारख़ाने, स्कूल व कॉलेज के लिये वक़्फ़ करें या दर्स देने वालों को तोह़्फ़तन दे दें तो اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ सवाब का अम्बार लग जाएगा।

मुझे दर्से फ़ैज़ाने सुन्नत की तौफ़ीक़ मिले दिन में दो मरतबा या इलाही[1]

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

3-शजरह शरीफ़

सूफ़ियाए किराम और मशाइख़े उ़ज़्ज़ाम رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْهِمْ का हमेशा से येह मा'मूल रहा है कि वोह मख़्सूस वक़्त में ह़ल्क़े बना कर ज़िक्र अज़्कार और शजरए मुबारका वग़ैरा पढ़ते हैं और इख़्तिताम पर अपने अस्लाफ़ (या'नी बुज़ुर्गों) को ईसाले सवाब करते हैं।[2] इस पर हमेशा ख़ुद अ़मल पैरा होते हैं और मुरीदीन व ख़ुलफ़ा को भी इस पर अ़मल करने की तल्क़ीन करते हैं। चुनान्चे, ह़ज़रते मिर्ज़ा मज़हर जाने जानां رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : ख़त्मे ख़्वाजगान व ख़त्मे ह़ज़रत मुजद्दिद (या'नी ह़ज़रते सय्यिदुना मुजद्दिदे अल्फ़े

1.....वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 130

2.....जन्नती ज़ेवर, स. 470 ब तसर्रुफ़

सानी) साहिब رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْهِمْ सुब्ह के हल्क़ए ज़िक्र के बा'द पाबन्दी से करें क्यूंकि येह मशाइख़ के मा'मूलात में से है, बहुत मुफ़ीद और बा बरकत है।[1]

शजरह के चार हुरूफ़ की निस्बत से "शजरए आ़लिया" पढ़ने के 4 फ़वाइद

आ'ला ह़ज़रत, इमामे अह्ले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़तावा रज़विय्या जिल्द 26 सफ़्ह़ा 590 पर लिखते हैं : शजरह हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तक बन्दे के इत्तिसाल (या'नी सिलसिले के मिलने) की सनद है जिस त़रह़ ह़दीस की असनादें। मज़ीद लिखते हैं : शजरह ख़्वानी से (या'नी शजरह पढ़ने के) मुतअ़द्दिद फ़वाइद हैं :

(क़ौसैन ﴿﴾ में दिये गए अल्फ़ाज़ इदारे की त़रफ़ से तस्हील व वज़ाह़त की कोशिश है।)

अव्वल : रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तक अपने इत्तिसाल (या'नी सिलसिले के मिलने) की सनद का ह़िफ़्ज़। (या'नी शजरए आ़लिया बार बार पढ़ने से नबिये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तक अपने (सिलसिलए त़रीक़त के) इत्तिसाल (या'नी मिलने) की सनद याद हो जाती है, जो यक़ीनन सआ़दत है। क्यूंकि जब मुरीद को येह याद रहेगा कि मैं ने जिस मुर्शिदे कामिल के हाथ में हाथ दिया है, उन का सिलसिला इन मशाइख़े उ़ज़्ज़ाम से होता हुवा नबिये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तक पहुंचता है, तो उस के दिल में अपने मशाइख़ की मह़ब्बत मज़ीद बढ़ेगी और सालिह़ीन (नेकों) से मह़ब्बत उख़रवी ने'मतों के ह़ुसूल का ज़रीआ़ है। ह़दीसे पाक में है : اَلْمَرْءُ مَعَ مَنْ اَحَبَّ या'नी आदमी उसी के साथ होगा जिस से वोह मह़ब्बत करता है।[2]

[1].....फ़तावा रज़विय्या, 7 / 624

[2] .....بخاری، کتاب الادب، باب علامة حب الله عزوجل . . . الخ، ص۱۵۲۹، حدیث:۶۱۶۸

दुवुम : सालिहीन (या'नी नेक बन्दों) का ज़िक्र कि मूजिबे नुज़ूले रह़मत (या'नी रह़मत के नाज़िल होने का सबब) है । (या'नी शजरह शरीफ़ पढ़ने से सालिहीन का ज़िक्र नसीब होता है और ज़िक्रे सालिहीन रह़मत के नाज़िल होने का सबब है । ह़दीस शरीफ़ में है कि नेक लोगों का ज़िक्र गुनाहों के लिये कफ़्फ़ारा है ।[1] एक और रिवायत में है कि नेक लोगों के तज़किरे के वक़्त (**अल्लाह** तआ़ला की) रह़मत नाज़िल होती है ।[2] **आ़रिफ़ बिल्लाह** सय्यिद मीर अ़ब्दुल वाहिद बिलगिरामी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه **सब्ए़ सनाबिल** में फ़रमाते हैं : मशाइख़े किराम رَحِمَهُمُ اللهُ का ज़िक्र सच्चे मुरीदों के ईमान को ताज़ा करता है और उन के वाक़िआ़त, मुरीदीन के ईमान पर तजल्लियां डालते हैं ।[3] शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिसे देहलवी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه अख़्बारुल अख़्यार के मुक़द्दमे में फ़रमाते हैं कि **अल्लाह** पाक के बरगुज़ीदा बन्दों का तज़किरा बाइ़से रह़मत व बाइ़से क़ुर्बे इलाही है ।)[4]

सिवुम : नाम ब नाम अपने आक़ायाने ने'मत (या'नी सिलसिले के मशाइख़े किराम رَحِمَهُمُ اللهُ) को ईसाले सवाब कि उन की बारगाह से मूजिबे नज़रे इनायत (या'नी नज़रे करम होने का सबब) है । (या'नी नाम ब नाम अपने सिलसिले के मशाइख़े किराम رَحِمَهُمُ اللهُ को ईसाले सवाब का मौक़अ़ मिलता है और येह उन की बारगाह से नज़रे करम होने का सबब है । चुनान्चे, जब मुरीद शजरए आ़लिया पाबन्दी से पढ़ता है और सिलसिले के बुज़ुर्गों की अरवाहे मुक़द्दसा को ईसाले सवाब भी करता है । तो इस से उन

[1] ..... جامع صغیر، حرف الذال، ص ۲۶۴، حدیث: ۴۳۳۱

[2] ..... معجم لابن المقری، الجزء الثانی، ص ۷۵، الرقم: ۱۵۳

[3] ..... سبع سنابل، سنبلہ دوم در بیان پیری و مریدی و حقیقت و مابیت آن، ص ۵۷

[4] ..... اخبار الاخیار، سلوک طریق الفلاح عند فقد التربیة بالاصطلاح، ص ۶

बुज़ुर्गों की अरवाहे मुक़द्दसा ख़ुश होती हैं और ईसाले सवाब करने वाले मुरीद पर ख़ुसूसी नज़रे इनायत की जाती है। जिस से मुरीद को दीनी व दुन्यवी बेशुमार बरकतें हासिल होती हैं।)

चहारुम : जब येह (या'नी शजरए आलिया पढ़ने वाला) अवक़ाते सलामत (या'नी राहत) में उन का (या'नी अपने सिलसिले के मशाइख़े किराम رَحِمَهُمُ اللّٰه का) नाम लेवा रहेगा। तो वोह अवक़ाते मुसीबत (या'नी किसी भी परेशानी और मुश्किल के वक़्त) में उस के दस्तगीर होंगे (या'नी उस की मदद फ़रमाएंगे)। रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : [1] تَعَرَّفْ اِلَى اللّٰهِ فِي الرَّخَاءِ يَعْرِفْكَ فِي الشِّدَّةِ तू ख़ुशहाली में अल्लाह तआला को पहचान वोह मुसीबत में तुझ पर नज़रे करम फ़रमाएगा। (या'नी जब शजरए आलिया पढ़ने वाला ख़ुशहाली में अपने सिलसिले के मशाइख़े किराम رَحِمَهُمُ اللّٰه का नाम लेवा रहेगा तो वोह अवक़ाते मुसीबत (या'नी किसी भी परेशानी और मुश्किल वक़्त) में उस के दस्तगीर होंगे (या'नी उस की मदद फ़रमाएंगे)। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ

मज़ीद येह कि शजरह शरीफ़ में दिये हुए अवरादो वज़ाइफ़ और मख़्सूस हिदायात पढ़ने से मुरीद को अपना वोह अ़हद भी याद रहेगा, जो उस ने मुर्शिदे कामिल के साथ किया था, नीज़ अवरादो वज़ाइफ़ पढ़ने की भी اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ बरकतें हासिल होंगी।[2]

सरकार की आमद मरहबा

पंजाब (पाकिस्तान) के मुक़ीम इस्लामी भाई का बयान है कि

[1] ..... مستدرك، كتاب معرفة الصحابة، تعليم النبي ابن عباس، ٤/٦٩٨، حديث: ٦٣٥٧

[2] ....शर्हे शजरए क़ादिरिय्या रज़विय्या अ़त्तारिय्या, स. 26 ता 29 ब तसर्रुफ़ क़लील।

اَلْحَمْدُلِلّٰه मैं तक़रीबन 8 साल से दा'वते इस्लामी के महके महके मदनी माहोल से वाबस्ता हूं और मुझे अ़त्तारी निस्बत भी ह़ासिल है। शैख़े त़रीक़त, अमीरे अह्ले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के अ़त़ाकर्दा रिसाले **शजरए क़ादिरिय्या रज़विय्या ज़ियाइय्या अ़त्तारिय्या** से शजरए आ़लिया और मुन्तख़ब अवरादो वज़ाइफ़ बा'दे फ़ज्र पढ़ने का मा'मूल है।

एक रोज़ मैं ने **शजरह शरीफ़** और अवरादो वज़ाइफ़ पढ़ने के बा'द इशराक़ व चाश्त के नवाफ़िल अदा किये और आराम के लिये लेट गया। जल्द ही मैं नींद की आग़ोश में पहुंच गया और ख़्वाब में ख़ुद को एक कमरे में पाया। मैं ने देखा कि एक मुबल्लिग़े दा'वते इस्लामी भी वहां मौजूद हैं और मुझ से फ़रमा रहे हैं : क्या आप को मा'लूम है कि आज इस शहर में सरकारे मदीना, सुरूरे क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तशरीफ़ लाने वाले हैं। मैं येह सुन कर ख़ुशी से झूम उठा और अपने मीठे मीठे मदनी आक़ा, दो आ़लम के दाता صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इस्तिक़्बाल के लिये बाहर की त़रफ़ लपका। जूंही मैं दरवाज़े के क़रीब पहुंचा तो उसे बन्द पाया, परेशान हो कर इधर उधर देखा कि बाहर निकलने का कोई दूसरा रास्ता मिल सके मगर उस कमरे से बाहर निकलने का एक ही रास्ता था जो बन्द था। फिर अचानक दरवाज़ा ख़ुद ब ख़ुद खुल गया। मैं फ़ौरन बाहर निकला तो लोगों ने मुझे बताया कि मक्की मदनी सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तो तशरीफ़ ले जा चुके हैं। ज़ियारत से मह़रूमी के सदमे ने मुझे ग़मगीन कर दिया और मेरी आंखों से आंसू बह निकले। फिर मैं ने (ख़्वाब ही में) अपने आप को ह़ज़रते बहाउद्दीन ज़करिय्या मुल्तानी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه के मज़ार के क़रीब पाया, इतने में सामने से

आने वाले चन्द घुड़ सुवार जब मेरे क़रीब से गुज़रे तो क्या देखता हूं कि एक घोड़े पर मेरे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सुवार हैं, आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का चेहरए मुबारक इन्तिहाई नूरानी और लबहाए मुबारका पर तबस्सुम था। बक़िय्या घोड़ों पर सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان सुवार थे। मैं ख़ुशी के आ़लम में **आक़ा की आमद मरहबा** का इस्तिक़्बाली ना'रा लगाने लगा। फिर मस्जिद में जा कर मीठे मीठे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की आमद का ए'लान किया और इस के बा'द मेरी आंख खुल गई।

या रब तेरे महबूब का जल्वा नज़र आए उस नूरे मुजस्सम का सरापा नज़र आए
ऐ काश कभी ऐसा भी हो ख़्वाब में मेरे हूं जिस की ग़ुलामी में वोह आक़ा नज़र आए

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

4-दुआ़

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! दुआ़ भी बा'दे फ़ज्र मदनी ह़ल्क़े का एक इन्तिहाई अहम जुज़्व (Part) है, शजरह शरीफ़ के तमाम ही अश्आ़र दुआ़इया हैं, दुआ़ मांगना बहुत बड़ी सआ़दत व इ़बादत बल्कि ह़दीसे पाक में है कि दुआ़ इ़बादत का मग़्ज़ है।[1] अपने करीम रब की अ़ज़ीम बारगाह से मुरादें पाने और दुन्यवी व उख़रवी मसाइब व मुश्किलात के ह़ल के लिये इस से बढ़ कर मुअस्सिर ज़रीआ़ कोई नहीं। इस लिये इख़्तितामे मदनी ह़ल्क़ा पर बारगाहे ख़ुदावन्दी में दुआ़ भी मांगी जाती है, कि क़ुरआने करीम और अह़ादीसे मुबारका में जगह जगह दुआ़ मांगने की तरग़ीब दिलाई गई है। जैसा कि पारह 2, सूरए बक़रह की आयत नम्बर 186 में इरशाद होता है :

[1] ..... ترمذی، کتاب الدعوات، ۲-باب منه، ص۷۷۷، حدیث: ۳۳۷۱

اُجِیْبُ دَعْوَةَ الدَّاعِ اِذَا دَعَانِ ۙ

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *दुआ क़बूल करता हूं पुकारने वाले की जब मुझे पुकारे ।*

एक मक़ाम पर इरशाद होता है :

اُدْعُوْنِیْۤ اَسْتَجِبْ لَكُمْ ؕ

(پ۲۴، المؤمن:۶۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *मुझ से दुआ करो मैं क़बूल करूंगा ।*

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अल्लाह पाक के नज़दीक कोई शै दुआ से बुज़ुर्ग तर नहीं ।[1] दुआ मुसलमानों का हथियार है, दीन का सुतून और आस्मानो ज़मीन का नूर है ।[2] दुआ एक अ़जीब ने'मत और उ़म्दा दौलत है कि परवर दगार तक़द्दस व तआ़ला (पाक और बुलन्दो बाला) ने अपने बन्दों को करामत फ़रमाई और उन को ता'लीम की, ह़ल्ले मुश्किलात में इस से ज़ियादा कोई चीज़ मुअस्सिर नहीं, और दफ़्ए़ बला व आफ़त में कोई बात इस से बेहतर नहीं ।[3] लिहाज़ा मुसीबतों से नजात चाहते हैं तो दुआ मांगते रहिये, जैसा कि मक्की मदनी सुल्त़ान, रह़मते आ़लमिय्यान صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुश्कबार है : बला उतरती है तो दुआ उस से जा मिलती है, फिर दोनों क़ियामत तक झगड़ा करते रहते हैं ।[4] या'नी दुआ उस बला को उतरने नहीं देती ।

इसी त़रह़ **रिज़्क़ में वुस्अ़त** दरकार है तो भी दुआ मांगिये । जैसा कि शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सह़ाबए किराम

[1] ..... ترمذی، کتاب الدعوات، باب ماجاء فی فضل الدعاء، ص۷۷۷، حدیث: ۳۳۷۰

[2] ..... مستدرك، کتاب الدعاء والتکبیر...الخ، الدعاء سلاح...الخ، ۲/۱۶۲، حدیث: ۱۸۵۵

[3].....फ़ज़ाइले दुआ, स. 54

[4] ..... مستدرك، کتاب الدعاء...الخ، الدعاء ینفع...الخ، ۲/۱۶۲، حدیث: ۱۸۵۶

عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان से इरशाद फ़रमाया : क्या मैं तुम्हें वोह चीज़ न बताऊं जो तुम्हें तुम्हारे दुश्मन से नजात दे और तुम्हारा रिज़्क़ वसीअ़ करे, रात दिन **अल्लाह** पाक से दुआ़ मांगते रहो कि दुआ़ मोमिन का हथियार है ।[1]

दुआ़ के 3 फ़ाएदे

इस पुर फ़ितन दौर में हर शख़्स परेशान है, त़रह़ त़रह़ की मुसीबतों में मुब्तला है, इसी सोचो बिचार में दिन रात गुज़रते हैं, अपने मसाइल को ह़ल करने के लिये हर शख़्स कोशिश करता है, इस सिलसिले में **अल्लाह** पाक के मह़बूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने हमें इन चीज़ों से छुटकारा ह़ासिल करने के लिये दुआ़ की तरग़ीब इरशाद फ़रमाई । चुनान्चे, आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जब कोई मुसलमान ऐसी दुआ़ मांगता है, जिस में गुनाह हो न क़त़्ए़ रेह़्मी तो **अल्लाह** पाक उसे 3 अ़त़ाओं में से एक ज़रूर देता है : उस की दुआ़ क़बूल कर लेता है या आख़िरत में उस के लिये ज़ख़ीरा कर देता है या उस जैसी मुसीबत टाल देता है ।[2]

जो मांगने का त़रीक़ा है उस त़रह़ मांगो

दरे करीम से बन्दे को क्या नहीं मिलता

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! दुआ़ कभी भी राएगां नहीं जाती इस का दुन्या में अगर असर ज़ाहिर न भी हो तो आख़िरत में अज्रो सवाब मिल ही जाएगा । लिहाज़ा दुआ़ में सुस्ती करना मुनासिब नहीं ।

[1] ..... مسند ابی یعلٰی، ۱۰۹-مسند جابر، ۲/۱۲۳، حدیث: ۱۸۱۲

[2] ..... مسند احمد، ۳۰-مسند ابی سعید الخدری، ۵/۴۷، حدیث: ۱۱۴۳۲

ज़िक्र के फ़ज़ाइल

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बा'दे फ़ज्र मदनी हल्क़े की इख़्तितामी दुआ के बा'द नमाज़े इशराक़ व चाश्त के इन्तिज़ार में अगर कुछ वक़्त बच जाए तो उसे ज़ाएअ मत कीजिये बल्कि ज़िक्रे इलाही में मश्ग़ूल हो जाइये कि हज़रते सय्यिदुना का'बुल अहबार رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : एक शख़्स मस्जिद के दरवाज़े पर चितकबरे घोड़े पर सामान लाद कर उसे राहे ख़ुदा में दे दे और ख़ुश दिली के साथ माल तक़्सीम कर दे और दूसरा शख़्स नमाज़े फ़ज्र के बा'द मस्जिद में सूरज निकलने तक ज़िक्रे इलाही में मश्ग़ूल रहे तो ज़िक्रुल्लाह में मश्ग़ूल रहने वाले ने ज़ियादा अज्र पाया।[1] **अल्लाह** पाक के ज़िक्र से दिलों को इत्मीनान की दौलत नसीब होती है। मगर अफ़्सोस ! आज सारी दुन्या में एक आलमगीर बे चैनी पाई जा रही है कोई मुल्क, शहर और गाउं बल्कि कोई घर ऐसा नहीं जहां बद अम्नी और बे चैनी न हो, आज हर शख़्स बे चैनी का शिकार नज़र आता है, नादान इन्सान शराब व रुबाब की महफ़िलों, सीनेमा घरों की गेलेरियों, ड्रामा गाहों और फ़ह्हाशी व उरयानी से मुरस्सअ नाइट क्लबों और जिन्सी व रूमानी नाविलों के मुतालए में सुकून की तलाश में सरगर्दां है, हालांकि क़ुरआने पाक ने इस बारे में हमारी राहनुमाई कुछ यूं फ़रमाई है :

اَلَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَ تَطْمَىٕنُّ قُلُوْبُهُمْ بِذِكْرِ اللّٰهِؕ اَلَا بِذِكْرِ اللّٰهِ تَطْمَىٕنُّ الْقُلُوْبُؕ ﴿۲۸﴾ (پ۱۳، الرعد:۲۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *वोह जो ईमान लाए और उन के दिल **अल्लाह** की याद से चैन पाते हैं सुन लो **अल्लाह** की याद ही में दिलों का चैन है।*

[1] .....حلیۃ الاولیاء، ذکر طبقۃ من تابعی اھل الشام، ۳۲۵ - کعب الاحبار، ۵/ ۴۲۰، الرقم: ۷۵۹۲

सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : उस के रह़मत व फ़ज़्ल और उस के एह़सान व करम को याद कर के बे क़रार दिलों को क़रार व इत़मीनान ह़ासिल होता है अगर्चे उस के अ़द्लो इताब (ग़ज़ब) की याद दिलों को ख़ाइफ़ कर देती है। जैसा कि दूसरी आयत में फ़रमाया :

اِنَّمَا الْمُؤْمِنُوْنَ الَّذِيْنَ اِذَا ذُكِرَ اللّٰهُ وَجِلَتْ قُلُوْبُهُمْ ① (پ۹، الانفال:۲)

ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا ने इस आयत की तफ़्सीर में फ़रमाया कि मुसलमान जब **अल्लाह** का नाम ले कर क़सम खाता है दूसरे मुसलमान उस का ए'तिबार कर लेते हैं और उन के दिलों को इत़मीनान हो जाता है।[2]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

बा'दे फ़ज्र मदनी ह़ल्क़े के फ़वाइद

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बा'दे फ़ज्र मदनी ह़ल्क़े में शिर्कत के चन्द फ़वाइद येह हैं :

1– रिज़ाए इलाही व महबूबे इलाही का हुसूल

मदनी ह़ल्क़े का सब से बड़ा फ़ाएदा येह है कि इस में शरीक होने वाले आ़शिक़ाने रसूल को **अल्लाह** करीम और उस के प्यारे रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की रिज़ा और ख़ुशनूदी ह़ासिल होने की क़वी उम्मीद है कि येह **अल्लाह** पाक की दी हुई तौफ़ीक़ ही है कि उस ने उन्हें इस वक़्त अपने घर में बैठ कर अपनी पाक किताब से कुछ सीखने का मौक़अ़ अ़त़ा फ़रमाया

1 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** ईमान वाले वोही हैं जब **अल्लाह** (को) याद किया जाए उन के दिल डर जाएं।

2 .....ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारह 13, अर्रअ़द, तह़तुल आयत : 28, स. 474

है, उस के महबूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : जो शख़्स सुब्ह़ के वक़्त मस्जिद में नेकी सीखने या सिखाने के लिये जाए तो उसे पूरे उ़मरे का सवाब मिलेगा।[1]

2–ज़ाकिरीन में शुमार

बा'दे फ़ज्र मदनी ह़ल्क़े के ज़रीए़ शुरका उन फ़ज़ाइल के ह़क़दार बन जाते हैं जो बा'दे फ़ज्र ता इशराक़ व चाश्त ज़िक्र में मसरूफ़ रहने वालों के मुतअ़ल्लिक़ मरवी हैं और यूं इस ख़ास वक़्त में अवरादो वज़ाइफ़ करने से उन का नाम ज़ाकिरीन (या'नी ज़िक्र करने वालों) में लिखा जाता है।

3–अस्लाफ़ से महब्बत

शजरह शरीफ़ में मज़्कूर बुज़ुर्गाने दीन को याद करने से उन की मह़ब्बत दिल में पैदा होती है और यूं शजरह शरीफ़ की बरकत से अस्लाफ़ की तवज्जोह ह़ासिल होने की भी उम्मीद है।

4–इस्लामी ता'लीमात का आ़म होना

बा'दे फ़ज्र मदनी ह़ल्क़े के ज़रीए़ शुरका और अह्ले मह़ल्ला में इस्लामी ता'लीमात आ़म होती हैं और नमाज़ियों की ता'दाद में भी इज़ाफ़ा होता है। ईमान की ह़िफ़ाज़त और शरीअ़त पर अ़मल करने का ज़ेह्न मिलता है और उन्हें सुन्नतों का आ़मिल बनाने के लिये **इजतिमाई व इनफ़िरादी कोशिश** का मौक़अ़ भी मिलता है।

[1] .....مستدرك، كتاب العلم، من جاء المسجد لتعلم الخير، ١/٢٨١، حديث: ٣١٧

5– मदनी कामों की तरक़्क़ी

बा'दे फ़ज्र मदनी हल्क़े के शुरका में से बा'ज़ इस्लामी भाइयों को 12 मदनी कामों में से हर हर मदनी काम के लिये अलग अलग ज़िम्मेदार बनाया जा सकता है, बल्कि यूं मज़ीद मुबल्लिग़ व मुअ़ल्लिम बनाना भी आसान है।

6–राबिते का ज़रीआ़

निगराने ज़ैली मुशावरत बा'दे फ़ज्र मुख़्तसरन **मदनी मश्वरा** कर के रोज़ाना के मदनी कामों का जाइज़ा भी ले सकते हैं और **इजतिमाई फ़िक्रे मदीना** की भी तरकीब हो सकती है।

7– नमाज़े इशराक़ व चाश्त

नमाज़े इशराक़ व चाश्त पर पाबन्दी नसीब होती है कि नमाज़े इशराक़ की फ़ज़ीलत में मरवी है कि **अल्लाह** पाक के महबूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जिस ने फ़ज्र की नमाज़ अदा की फिर तुलूए आफ़्ताब तक **अल्लाह** पाक का ज़िक्र करता रहा फिर दो या चार रक्अ़तें अदा कीं, उस के बदन को जहन्नम की आग न छू सकेगी।[1] इसी त़रह़ नमाज़े चाश्त की फ़ज़ीलत के मुतअ़ल्लिक़ सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इरशाद फ़रमाते हैं : जो चाश्त की दो रक्अ़तें पाबन्दी से अदा करता रहे उस के गुनाह मुआ़फ़ कर दिये जाते हैं, अगर्चे समुन्दर की झाग के बराबर हों।[2]

[1] .....شعب الایمان ۲۳–باب فی الصیام، فصل فیمن فطر صائم، ۳/۴۲۰، حدیث: ۳۹۵۷

[2] .....ابن ماجه، کتاب اقامة الصلاة...الخ، باب ما جاء فی صلاة الضحی، ص ۲۲۳، حدیث: ۱۳۸۲

8– फ़हमे कुरआन

कुरआन फ़हमी बहुत बड़ी इबादत व सआदत है। बल्कि कुरआन का मुसलमानों पर येह हक़ है कि वोह इसे समझें और इस में ग़ौरो फ़िक्र करें मगर अफ़्सोस ! फ़ी ज़माना मुसलमानों की एक ता'दाद इसे समझने और इस में ग़ौरो फ़िक्र से ग़ाफ़िल है। चुनान्चे, **बा'दे फ़ज्र मदनी हल्क़े** में शिर्कत की बरकत से जहां कुरआने करीम की रोशन आयात की तिलावत सुनने की सआदत व फ़ज़ीलत हासिल होती है, वहीं तर्जमा व तफ़्सीर सुन कर कुरआने करीम का फ़हम (या'नी समझ बूझ) भी हासिल होती है।

9–मस्जिद में बैठने का शरफ़

اَلْحَمْدُ لِلّٰه **बा'दे फ़ज्र मदनी हल्क़े** के शुरका को **अल्लाह** पाक के घर में बैठने का शरफ़ हासिल होता है कि जितनी देर यहां बैठेंगे गुनाहों वग़ैरा से बचे रहेंगे। जैसा कि मन्क़ूल है कि एक बुज़ुर्ग को किसी ने देखा कि वोह मस्जिद में बैठे अपने नफ़्स को यूं समझा रहे थे : बैठ जा ! कहां और क्यूं जाना चाहता है ? क्या मस्जिद से भी बेहतर कोई जगह है जहां जाना चाहता है ? ज़रा देख ! यहां रहमतों की कैसी बरसात है ? जब कि तू चाहता है कि बाहर जा कर कभी किसी के घर को देखे, कभी किसी के घर को।[1]

10– अच्छी सोहबत की बरकतें

बा'दे फ़ज्र मदनी हल्क़े में शिर्कत का एक फ़ाएदा येह भी है कि अच्छे और नेक लोगों की सोहबत नसीब होती है जिस के बहुत फ़ज़ाइलो

[1] .....ذم الھوی، الباب الثالث، ص ۴۳

बरकात हैं, नेक लोगों की सोहबत और उन का क़ुर्ब नेक ही नहीं बनाता, बल्कि ज़ाहिरो बातिन की इस्लाह का बाइस भी बनता है, दिल गुनाहों से बेज़ार और नेकियों की तरफ़ माइल रहता है। सूफ़ियाए किराम (رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام) फ़रमाते हैं कि नेक सोहबत सारी इबादात से अफ़्ज़ल है, देखो सहाबए किराम (عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان) सारे जहां के औलिया (رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْهِم) से अफ़्ज़ल हैं क्यूं ? इस लिये कि वोह सोहबत याफ़्ता जनाबे मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हैं।[1]

मर्कज़ी मजलिसे शूरा के मदनी मश्वरों से माख़ूज़ मदनी फूल

❀☞ तमाम ज़िम्मेदाराने दा'वते इस्लामी को ताकीद है कि बा'दे फ़ज्र मदनी हल्क़ा लगाया करें।[2]

❀☞ बा'दे फ़ज्र मदनी हल्क़ा, मस्जिद दर्स और सदाए मदीना में आप के अ़लाक़े के लोगों का तहफ़्फ़ुज़ है।[3]

नशे बाज़ की इस्लाह का राज़

मर्कज़ुल औलिया (लाहोर, पाकिस्तान) के अ़लाक़े चाहमीरां के मुक़ीम एक इस्लामी भाई अपनी ज़िन्दगी में मदनी इन्क़िलाब बरपा होने के अहवाल कुछ यूं बयान करते हैं कि सोहबते बद की वज्ह से मेरे अत़्वार व किरदार में इस क़दर बिगाड़ पैदा हो गया था कि न मुझे छोटों पर शफ़्क़त का कोई

[1] .....मिरआतुल मनाजीह, बाब अल्लाह का ज़िक्र और उस से क़ुर्ब हासिल करना, पहली फ़स्ल, 3 / 312

[2] .....मदनी मश्वरा मर्कज़ी मजलिसे शूरा, 27 मुहर्रमुल हराम ता 2 सफ़रुल मुज़फ़्फ़र 1432 हिजरी, 3 ता 7 जनवरी 2011

[3] .....मदनी मश्वरा मर्कज़ी मजलिसे शूरा, यकुम ता 7 सफ़रुल मुज़फ़्फ़र 29 जनवरी ता 4 फ़रवरी 2009

एह़सास था और न ही बड़ों के अदबो एह़तिराम का कोई पास। दिन भर आवारा दोस्तों के साथ आवारगी में मस्त रहता और शब भर मुख़्तलिफ़ गुनाहों का सिलसिला जारी रहता। वक़्त के साथ साथ बुराइयों की दलदल में धंसता चला जा रहा था। बिल आख़िर नौबत यहां तक पहुंची कि मैं भी दोस्तों के साथ नशे की सूरत में ज़ह्र पीने लगा, जब घरवालों को मेरी इस आ़दते बद के बारे में पता चला तो बहुत परेशान हुए। उन्हें येही फ़िक्र दामनगीर थी कि किसी त़रह़ मुझे इस तबाही से बचाया जाए। उन्हों ने बारहा समझाया मगर मुझ पर कोई असर न हुवा। दिन ब दिन नशे की आ़दत रासिख़ होती गई और नौबत यहां तक आ गई कि मैं कई क़िस्म के नशों मसलन हेरोइन, मुख़्तलिफ़ मेडीसिन, चरस, शराब वग़ैरा से अपनी ज़िन्दगी को तेज़ी से बरबाद करने लगा। बिल आख़िर इस आ़दते बद ने मुझे बिल्कुल नाकारा कर के रख दिया। मैं घरवालों और रिश्तेदारों की नज़रों से गिर चुका था। बस शबो रोज़ नशे में बद मस्त रहता। जब नशा न मिलता तो मेरी ह़ालत पागलों की त़रह़ हो जाती और मैं इस ज़ह्रे क़ातिल को ह़ासिल करने के लिये चोरी चकारी की आ़दते बद में मुब्तला हो गया। चोरी का कोई भी मौक़अ़ हाथ से न जाने देता। जब कुछ रूपे हाथ लग जाते तो फ़ौरन दरिन्दा सिफ़त इन्सान (जो नशे को आ़म कर के लोगों की ज़िन्दगियों से खेल कर अपनी क़ब्रो आख़िरत को बरबाद कर रहे थे उन) के पास पहुंच जाता और उन्हें रक़म दे कर नशे की ला'नत ह़ासिल करता और अपने अन्दर की आग को ठन्डी करता। अल ग़रज़ मैं सर ता पा ज़नजीरे इस्यां में जकड़ चुका था जिस से ख़लासी ब ज़ाहिर मुम्किन मा'लूम न होती थी मगर **अल्लाह** पाक का फ़ज़्लो करम शामिले ह़ाल रहा कि ख़ुश क़िस्मती से मुझे दा'वते इस्लामी का महका महका मुश्कबार मदनी माह़ोल मुयस्सर आ गया। हुवा कुछ यूं कि एक रोज़ मेरी मुलाक़ात दा'वते इस्लामी से वाबस्ता एक इस्लामी भाई से हो गई

जिन की इनफ़िरादी कोशिशों से मुझे **दर्से फ़ैज़ाने सुन्नत** में शिर्कत की सआ़दत नसीब हुई। दर्स इन्तिहाई आसान फ़हम होने के साथ साथ पन्दो नसीह़त के मदनी फूलों से भरपूर था। मैं ने भी कुछ मदनी फूल अपने दामन में भर लिये और उन से अपने गुलशने ह़यात को महकाने की निय्यत कर ली। दर्स के बा'द मुलाक़ात के दौरान उन इस्लामी भाई ने बड़ी मह़ब्बत से मुझे दर्स में पाबन्दी से शिर्कत करने की तरग़ीब दिलाई, चुनान्चे, इस के बा'द मैं दर्स में और दर्स की बरकत से हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में शिर्कत का पाबन्द बन गया। दा'वते इस्लामी के इस मदनी माह़ोल में आना जाना तो क्या हुवा मुझे अपनी साबिक़ा ज़िन्दगी के बेश क़ीमत **अनमोल हीरों** के ज़ियां का एह़सास होने लगा। मैं ने इस की तलाफ़ी के लिये दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल से वाबस्तगी की पुख़्ता निय्यत कर ली और अपनी इस नेक निय्यती को अ़मली जामा पहनाने, मदनी माह़ोल में इस्तिक़ामत पाने और ख़ूब ख़ूब नेकियां कमाने के लिये दा'वते इस्लामी के तह़त होने वाले 63 रोज़ा तरबियती कोर्स में दाख़िला ले लिया। यूं मुझ सा बद किरदार इस्यां शिआ़र और मुआ़शरे का इन्तिहाई ज़लीलो ख़्वार शख़्स सुन्नतों पर अ़मल की बरकत से बा किरदार, नेकूकार और मुआ़शरे का इ़ज़्ज़तदार इन्सान बन गया। اَلْحَمْدُ لِلّٰه मदनी माह़ोल की बरकत से अमीरे अह्ले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का मुरीद हो कर क़ादिरी अ़त्तारी बन चुका हूं। **अल्लाह** पाक की अमीरे अह्ले सुन्नत पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो।[1]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

[1].....नशे बाज़ की इस्लाह़ का राज़, स. 2

बा'दे फ़ज्र मदनी हल्क़े से मुतअ़ल्लिक़ एह़तियातों और मुफ़ीद मा'लूमात पर मब्नी सुवाल जवाब

शरई एहतियातें

सुवाल 1 : कुरआने करीम की तिलावत सुनना फ़र्ज़ है तो क्या तफ़्सीर और दर्से फ़ैज़ाने सुन्नत का भी येही हुक्म है ?

जवाब : तफ़्सीर व दर्स को ख़ामोशी से सुनना अगर्चे वाजिब नहीं मगर बे तवज्जोही से सुनने से इस की बरकतें ज़ाइल होने का अन्देशा रहता है, येही वज्ह है कि दा'वते इस्लामी के तमाम मुबल्लिग़ीन मदनी दर्स से पहले येह ए'लान करते हुए नज़र आते हैं : **ला परवाही के साथ इधर उधर देखते हुए ज़मीन पर उंगली से खेलते हुए, लिबास, बदन या बालों वग़ैरा को सहलाते हुए दर्स सुनने से इस की बरकतें ज़ाइल होने का अन्देशा है।** नीज़ दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 102 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **"इल्मो ह़िक्मत के 125 मदनी फूल"** सफ़ह़ा 68 पर है : इल्मे दीन की बातें ग़ौर से सुननी चाहियें कि बे तवज्जोही के साथ सुनने से ग़लत़ फ़ह्मी का सख़्त अन्देशा रहता और बसा अवक़ात "हां" का "ना" और "ना" का "हां" समझ में आता है, बल्कि مَعَاذَاللّٰه कभी ऐसा भी होता है कि कहा गया था ह़लाल और ज़ेह्न में बैठ जाता है ह़राम।

सुवाल 2 : जिन 3 आयात की तिलावत, तर्जमा व तफ़्सीर बा'दे फ़ज्र मदनी ह़ल्क़े में सुनने की तरकीब हो, उन में से एक आयते मुबारका आयते सज्दा वाली हो तो क्या उस का तर्जमा व तफ़्सीर सुन कर भी सज्दए तिलावत वाजिब हो जाएगा ?

जवाब : जी हां ! अगर आयते सज्दा का सिर्फ़ तर्जमा व तफ़्सीर पढ़ी गई तो सज्दा वाजिब होगा और इस तिलावत की वज्ह से तमाम सुनने वालों पर सज्दए तिलावत वाजिब है।

सुवाल 3 : दौराने मदनी ह़ल्क़ा सलाम का जवाब दे सकते हैं या नहीं ?

जवाब : फ़ुक़हाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام ने बा'ज़ जगहों पर सलाम न करने और उन के जवाब के मुतअ़ल्लिक़ कुछ सूरतें बयान की हैं उन में से एक येह है कि जो लोग मस्जिद में तिलावते क़ुरआन और तस्बीह़ व दुरूद में मश्ग़ूल हैं या इन्तिज़ारे नमाज़ में बैठे हैं उन्हें सलाम नहीं करना चाहिये कि येह सलाम का वक़्त नहीं। अलबत्ता ! किसी ने उन्हें सलाम कर दिया तो उन्हें इख़्तियार है कि सलाम का जवाब दें या न दें।[1]

सुवाल 4 : मदनी ह़ल्क़ा जारी था कि किसी दिन नमाज़ियों (मुसाफ़िरों) की इतनी ता'दाद अचानक आ जाए कि मस्जिद के छोटे होने की वज्ह से जगह तंग पड़ जाए तो अब क्या किया जाए ? क्या नमाज़ियों को नमाज़ पढ़ने के लिये जगह दे दी जाए या मदनी ह़ल्क़ा जारी रखा जाए ?

जवाब : येह नादिर सूरत है क्यूंकि मदनी ह़ल्क़ा बा'दे फ़ज्र होता है, फिर भी अगर ऐसा हो तो नमाज़ के लिये नमाज़ियों को जगह दी जाए कि वक़्त पर नमाज़ अदा करना ज़रूरी है और वैसे भी फ़तावा हिन्दिया में है कि मस्जिद में जगह तंग हो गई तो जो नमाज़ पढ़ना चाहता है वोह बैठे हुए को कह सकता है कि सरक जाओ, नमाज़ पढ़ने की जगह दे दो। अगर्चे वोह शख़्स ज़िक्रो दर्स या तिलावते क़ुरआन में मश्ग़ूल हो या मो'तकिफ़ हो।[2]

---

[1] .....فتاوی ھندیہ، کتاب الکراھیۃ، الباب السابع فی السلام و تشمیت العاطس، ۵/۴۰۲

[2] .....فتاوی ھندیہ، کتاب الکراھیۃ، الباب الخامس فی آداب المسجد و القبلۃ...الخ، ۵/۳۹۷

सुवाल 5 : मदनी हल्क़े के लिये मस्जिद की अश्या मसलन बिजली और चटाइयां वग़ैरा इस्ति'माल करना कैसा ?

जवाब : मदनी हल्क़ा अगर्चे दा'वते इस्लामी का एक मदनी काम है, मगर हक़ीक़त में इस का बुन्यादी मक़्सद क़ुरआन फ़हमी, इल्मे दीन की इशाअ़त और ज़िक्र अज़्कार के इलावा नमाज़े इशराक़ व चाश्त की अदाएगी तक के वक़्त को कार आमद बनाना और फ़ुज़ूल गोई से बचना व बचाना है और येह सब काम इबादत ही हैं। लिहाज़ा इस दौरान ज़रूरतन बिजली व चटाइयां वग़ैरा इस्ति'माल करने में कोई हरज नहीं, अलबत्ता ! शुरकाए मदनी हल्क़ा इस बात का ज़रूर ख़याल रखें कि बिला वज्ह फ़ालतू लाइटें और पंखे वग़ैरा न चलाएं।

सुवाल 6 : मदनी हल्क़े के बा'द अगर कोई शरई मस्अला पूछे तो क्या किया जाए ?

जवाब : अगर 100 फ़ीसद दुरुस्त मस्अला मा'लूम हो तो बताने में हरज नहीं वगरना दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत में राबिता करने का मश्वरा दिया जाए।

सुवाल 7 : वक़्त मुक़र्रर कर के शजरह शरीफ़ पढ़ना कैसा ?

जवाब : येह सूफ़िया का त़रीक़ा है कि वोह एक वक़्त मुक़र्रर कर के हल्क़ा बना कर ज़िक्र अज़्कार करते, शजरह पढ़ते थे।

सुवाल 8 : बा'दे फ़ज्र मदनी हल्क़े का इख़्तिताम चूंकि नमाज़े इशराक़ व चाश्त की अदाएगी पर होता है, लिहाज़ा अगर कोई इस्लामी भाई नमाज़े इशराक़ की जमाअ़त में शरीक न हो तो क्या वोह चाश्त की नमाज़ जमाअ़त के साथ अदा कर सकता है या नहीं ?

जवाब : कर सकता है।

तन्ज़ीमी एहतियातें

सुवाल 1 : क्या फ़ैज़ाने सुन्नत के इलावा शैख़े त़रीक़त, अमीरे अह्ले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की किसी और किताब या रिसाले के 4 सफ़ह़ात पढ़ कर सुनाए जा सकते हैं ?

जवाब : बा'दे फ़ज्र मदनी ह़ल्क़े में फ़ैज़ाने सुन्नत के 4 सफ़ह़ात ही पढ़े जाएं।

सुवाल 2 : वक़्त की कमी के बाइस क्या 4 सफ़ह़ात से कम भी पढ़े जा सकते हैं ?

जवाब : फ़ैज़ाने सुन्नत जिल्द अव्वल से 4 सफ़ह़ात मुकम्मल पढ़े जाएं जब कि जिल्द दुवुम के अब्वाब या'नी **नेकी की दा'वत** और **ग़ीबत की तबाहकारियां** के सफ़ह़ात में कमी की जा सकती है क्यूंकि जिल्द दुवुम के सह़फ़ात साइज़ में ब निस्बत जिल्द अव्वल के बड़े हैं।

सुवाल 3 : बा'दे फ़ज्र मदनी ह़ल्क़ों की ता'दाद बढ़ाने के लिये क्या इक़्दामात किये जाएं ?

जवाब : बिल ख़ुसूस "**मदनी**" इस्लामी भाइयों और बिल उ़मूम हर सत़ह़ के ज़िम्मेदारान को बा'दे फ़ज्र मदनी ह़ल्क़े में शिर्कत करने या **मदनी ह़ल्क़ा** लगाने की तरकीब करनी चाहिये। जितनी बड़ी सत़ह़ का तन्ज़ीमी ज़िम्मेदार बा'दे फ़ज्र मदनी ह़ल्क़ा लगाएगा, उसी क़दर मदनी ह़ल्क़ों की ता'दाद बढ़ने के साथ साथ शुरका की ता'दाद में भी इज़ाफ़ा होगा। तमाम **ज़ैली ह़ल्क़ों का हदफ़** बना कर इस मदनी काम को आगे से आगे बढ़ाने की कोशिश जारी रखी जाए, मसलन हर माह **कारकर्दगी का जाइज़ा** लिया जाए कि कुल कितने ज़ैली ह़ल्क़े हैं, कितने ज़ैली ह़ल्कों में बा'दे फ़ज्र मदनी ह़ल्क़ों की तरकीब हो चुकी है, कितनों में बाक़ी है वग़ैरा। इस त़रह़ मुसलसल जाइज़ा लेते रहने से इस मदनी काम में **तरक़्क़ी व मज़बूत़ी** आती जाएगी। जहां पहले से मदनी ह़ल्क़े की तरकीब हो रही है, उस को भी जारी रखना है और नए ज़ैली ह़ल्क़ों में मदनी ह़ल्क़ा शुरूअ़ भी करवाना है।

सुवाल 4 : मदनी हल्क़ा एक ही इस्लामी भाई लगाए या ज़िम्मेदारियां तक़्सीम भी की जा सकती हैं ?

जवाब : एक इस्लामी भाई भी येह तीनों काम कर सकता है और 3 इस्लामी भाइयों में मुख़्तलिफ़ ज़िम्मेदारियां तक़्सीम भी की जा सकती हैं मसलन एक इस्लामी भाई 3 आयात की तिलावत, तर्जमा व तफ़्सीर की तरकीब करे, एक मदनी दर्स, एक शजरह शरीफ़ पढ़ने और दुआ़ की तरकीब करे।

सुवाल 5 : बा'दे फ़ज्र मदनी हल्क़े को क्या फ़क़त़ मदनी हल्क़ा कहा जा सकता है ?

जवाब : नहीं, क्यूंकि मदनी हल्क़े तो बहुत सारे हैं जब कि फ़ज्र की नमाज़ के बा'द होने वाला मदनी हल्क़ा **12 मदनी कामों** में से **रोज़ाना का** एक मदनी काम है, जिस के लिये एक मख़्सूस इस्तिलाह़ **बा'दे फ़ज्र मदनी हल्क़ा** ही इस्ति'माल की जाती है।

सुवाल 6 : क्या 3 आयात से कम भी पढ़ सकते हैं ?

जवाब : एक ऐसी आयत जिस की तफ़्सीर इतनी है कि वोह 3 आयात के बराबर है तो एक आयत भी पढ़ने से मदनी इन्आ़म पर अ़मल मान लिया जाएगा।

सुवाल 7 : जहां अपनी मसाजिद नहीं (या'नी जिस मस्जिद में आ़शिक़ाने रसूल की ख़िदमत न हो), या हैं मगर मदनी हल्क़ा लगाने की इजाज़त नहीं, तो वहां क्या तरकीब की जाए ?

जवाब : किसी घर, होस्टेल, दुकान वग़ैरा पर भी येह तरकीब की जा सकती है।

सुवाल 8 : अगर किसी जगह बा'दे फ़ज्र मद्रसतुल मदीना बालिग़ान की भी तरकीब हो तो अब क्या किया जाए ?

जवाब : बा'दे फ़ज्र मदनी हल्क़े के बा'द मद्रसतुल मदीना बालिग़ान की तरकीब भी की जा सकती है।

मुफ़ीद मा'लूमात पर मब्नी सुवालात

सुवाल 1 : बा'दे फ़ज्र मदनी हल्क़े का मक़्सद क्या है ?

जवाब : बा'दे फ़ज्र मदनी हल्क़े का मक़्सद **अल्लाह** पाक की रिज़ा और उस ज़ैली हल्क़े के आ़शिक़ाने रसूल को **ता'लीमाते कुरआनी व दीनी मा'लूमात** के अन्वार से रोशन व मुनव्वर और मदनी माहोल से वाबस्ता कर के इस मदनी मक़्सद "**मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है,** اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ" के लिये मसरूफ़े अ़मल करना है।

सुवाल 2 : दौराने दर्स आयात वग़ैरा भी पढ़ी जाएं या फ़क़त़ तर्जमे पर इक्तिफ़ा किया जाए ?

जवाब : तफ़्सीरे कुरआन में आयात पढ़ी जाए और दर्से फ़ैज़ाने सुन्नत में फ़क़त़ तर्जमे पर इक्तिफ़ा किया जाए।

सुवाल 3 : अगर दुरुस्त कुरआने करीम पढ़ने वाला मुयस्सर न हो तो तफ़्सीरे कुरआन की क्या तरकीब की जाए ?

जवाब : दा'वते इस्लामी के सेंकड़ों जामिअ़तुल मदीना और हज़ारों मद्रसतुल मदीना के नाज़िमीन / क़ारी साहिबान / त़लबए किराम में से किसी से भी तरकीब हो सकती है, मद्रसतुल मदीना बालिग़ान पढ़ाने वाले क़ारी साहिबान और त़लबए किराम व दीगर इस्लामी भाई (जो अह्ल हों) उन की भी तरकीब की जा सकती है।

सुवाल 4 : क्या शजरे के बीच में शे'र नम्बर 14 (दे **मुह़म्मद** के लिये रोज़ी कर अह़मद के लिये ❊ ख़्वाने फ़ज़्लुल्लाह से ह़िस्सा गदा के वासित़े) और शे'र नम्बर 16 (हुब्बे अह्ले बैत दे **आले मुह़म्मद** के लिये ❊ कर शहीदे इ़श्क़े ह़म्ज़ा पेश्वा के वासित़े) में आने वाले लफ़्ज़ **मुह़म्मद** और **आले मुह़म्मद** पर अंगूठे चूम सकते हैं ? या दुरूद शरीफ़ पढ़ सकते हैं ?

जवाब : शजरे के बीच में आने वाले लफ़्ज़े "**मुहम्मद**" से मुराद सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का नामे मुबारक नहीं है, इस लिये येह अंगूठे चूमने और दुरूद शरीफ़ पढ़ने का मौक़अ़ नहीं है।

सुवाल 5 : क्या मोबाइल / आई पेड / आई फ़ोन वग़ैरा से देख कर मदनी ह़ल्क़ा लगाया जा सकता है ?

जवाब : बेहतर येह है कि किताब से देख कर ही मदनी ह़ल्क़ा लगाया जाए।

सुवाल 6 : मदनी ह़ल्क़ा लगाने के लिये क्या **मदनी आ़लिम**[1] होना ज़रूरी है ?

जवाब : मदनी आ़लिम होना ज़रूरी नहीं, हां इतनी सलाहि़य्यत होना ज़रूरी है कि किताब से देख कर दुरुस्त पढ़ सकते हों।

सुवाल 7 : क्या मदनी ह़ल्क़े के लिये माईक का इस्ति'माल किया जा सकता है ?

जवाब : माईक का इस्ति'माल उस वक़्त किया जाए जब उस की अशद्द ह़ाजत हो, मसलन शुरका की ता'दाद इतनी हो जाए कि बिग़ैर माईक के आवाज़ पहुंचाना मुम्किन न हो। अगर माईक इस्ति'माल किया भी जाए तो जितनी ह़ाजत हो, उतनी ही आवाज़ खोली जाए।

अल्लाह ! करम ऐसा करे तुझ पे जहां में
ऐ दा'वते इस्लामी तेरी धूम मची हो [2]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

1.....दा'वते इस्लामी के जामिअ़तुल मदीना से दर्से निज़ामी मुकम्मल कर के सनदे फ़राग़त ह़ासिल करने वाले को "**मदनी**" कहा जाता है।

2.....वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 315

ماخذ ومراجع

کتاب	مطبوعہ	کتاب	مطبوعہ
قرآن مجید	**********	صحیح مسلم	دار الکتب العلمیۃ بیروت 2008ء
کنز الایمان	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ ۱۴۳۲ھ	سنن ابن ماجۃ	دار الکتب العلمیۃ بیروت 2009ء
تفسیر قرطبی	دار الفکر، بیروت ۱۴۲۹ھ	سنن ابی داود	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۲۸ھ
الاتقان فی علوم القرآن	دار الکتب العلمیۃ بیروت 2015ء	سنن الترمذی	دار الکتب العلمیۃ بیروت 2008ء
خزائن العرفان	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی ۱۴۳۲	مسند ابی یعلی	دار الفکر بیروت ۱۴۲۲ھ
مصنف عبد الرزاق	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۲۱ء	المعجم الاوسط	دار الفکر، عمان ۱۴۲۰ھ
مصنف ابن ابی شیبۃ	مدینۃ الاولیاء ملتان ۱۴۰۹ھ	معجم لابن المقری	مکتبۃ الرشد ریاض ۱۴۱۹ھ
مسند احمد	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۲۹ھ	المستدرک علی الصحیحین	دار المعرفۃ، بیروت ۱۴۲۷ھ
سنن الدارمی	دار المعرفۃ بیروت ۱۴۲۱ھ	شعب الایمان	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۲۹ھ
صحیح البخاری	دار المعرفۃ بیروت ۱۴۲۸ھ	الجامع الصغیر	دار الکتب العلمیۃ، بیروت ۱۴۳۳ھ
جامع العلوم والحکم	دار الفکر، بیروت 2011ء	فیضان پیر مہر علی شاہ	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی
مراٰۃ المناجیح	نعیمی کتب خانہ گجرات	حالاتِ زندگی حکیم الامت مفتی احمد یار خان	نعیمی کتب خانہ گجرات 2004ء
بنیادی عقائد اور معمولات اہلسنت	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی		
الفتاوی الھندیۃ	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۲۱ھ	فیضانِ محدث اعظم	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی ۱۴۳۵ھ
فتاویٰ رضویہ	رضا فاؤنڈیشن، لاہور	علم و تجربت کے 125 مدنی پھول	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی ۱۴۳۱ھ
بہار شریعت	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی ۱۴۳۵ھ		
جنتی زیور	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی ۱۴۲۷ھ	فضائل دعا	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی ۱۴۳۰ھ
قوت القلوب	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۲۶ھ	فیضان سنت	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی ۱۴۲۸ھ
احیاء الاحیاء	النوریۃ الرضویۃ لاہور	مدنی حج سورہ	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی ۱۴۲۹ھ
ذم الھویٰ	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۲۰ھ	شرح شجرہ قادریہ رضویہ عطاریہ	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی
سبع سنابل (فارسی)	مکتبہ قادریہ جامعہ نظامیہ لاہور ۱۴۰۲ھ		
حلیۃ الاولیاء	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۲۷ھ	نشے باز کی اصلاح کا راز	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی
تاریخ مدینہ دمشق	دار الفکر بیروت ۱۴۱۷ھ	فیروز اللغات	فیروز سنز لاہور
تاریخ بغداد	دار الکتب العلمیۃ بیروت 2011ء	حدائق بخشش	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی ۱۴۳۳ھ
اخبار ابی حنیفۃ	عالم الکتب ۱۴۰۵ھ	سامان بخشش	مکتبہ اشرفیہ ۱۳۹۹ھ
مناقب الامام الشافعی للبیہقی	دار التراث القاھرۃ ۱۳۹۰ھ	وسائل بخشش (مرمّم)	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی ۱۴۳۶ھ

फ़ेहरिस्त

उनवान	सफ़्हा	उनवान	सफ़्हा
दुरूदे पाक की फ़ज़ीलत	1	3-शजरह शरीफ़	22
मा'मूलाते इमामे हसन मुज्तबा رضی اللہ عنہ	1	शजरह के चार हुरूफ़ की निस्बत से "**शजरए आलिया**" पढ़ने के 4 फ़वाइद	23
सुब्ह के वक़्त को ग़नीमत जानिये	2	सरकार की आमद मरहबा	25
"मदनी हल्क़ा" के 8 हुरूफ़ की निस्बत से बा'दे फ़ज्र ता इशराक़ मस्जिद में बैठने के मुतअ़ल्लिक़		4-दुआ़	27
आठ फ़रामीने मुस्तफ़ा	4	दुआ़ के 3 फ़ाएदे	29
सुन्नत को ज़िन्दा करने की कोशिश	6	ज़िक्र के फ़ज़ाइल	30
बा'दे फ़ज्र मदनी हल्क़ा क्या है?	7	बा'दे फ़ज्र मदनी हल्क़े के फ़वाइद	31
तन्ज़ीमी तौर पर मदनी हल्क़ा किस के ज़िम्मे है?	8	1-रिज़ाए इलाही व महबूबे इलाही का हुसूल	31
मदनी हल्क़े का तरीक़ा	8	2-ज़ाकिरीन में शुमार	32
मदनी हल्क़ा मस्जिद में लगाने की हिक्मत	9	3-अस्लाफ़ से महब्बत	32
अस्लाफ़ के मदनी हल्क़े	10	4-इस्लामी ता'लीमात का आ़म होना	32
﴾1﴿ इमामे आ'ज़म का मा'मूल	10	5- मदनी कामों की तरक़्क़ी	33
﴾2﴿ इमाम शाफ़ेई का मा'मूल	11	6-राबिते का ज़रीआ़	33
﴾3﴿ इमाम वकीअ़ का मा'मूल	11	7- नमाज़े इशराक़ व चाश्त	33
﴾4﴿ दमिश्क़, हिम्स, मक्का और बसरा वालों का तरीक़ा	12	8- फ़हमे क़ुरआन	34
﴾5﴿ पीर मेहर अ़ली शाह رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का मा'मूल	12	9-मस्जिद में बैठने का शरफ़	34
﴾6﴿ हुज़ूर मुहद्दिसे आ'ज़म का मा'मूल	13	10- अच्छी सोहबत की बरकतें	34
﴾7﴿ मुफ़्ती अहमद यार ख़ान رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का मा'मूल	13	मर्कज़ी मजलिसे शूरा के मदनी मश्वरों से माख़ुज़ मदनी फूल	35
मदनी हल्क़े के 4 मा'मूलात की वज़ाहत	14	नशे बाज़ की इस्लाह का राज़	35
1- तीन आयात की तिलावत, तर्जमा व तफ़्सीर	14	बा'दे फ़ज्र मदनी हल्क़े से मुतअ़ल्लिक़ एहतियातें और मुफ़ीद मा'लूमात पर मब्नी सुवाल जवाब	38
2- फ़ैज़ाने सुन्नत के 4 सफ़्हात पढ़ना व सुनना	16	शरई एहतियातें	38
फ़ैज़ाने सुन्नत जिल्द अव्वल में क्या कुछ है?	19	तन्ज़ीमी एहतियातें	41
फ़ैज़ाने सुन्नत जिल्द दुवुम में क्या कुछ है?	20	मुफ़ीद मा'लूमात पर मब्नी सुवालात	43
फ़ैज़ाने सुन्नत के मुतअ़ल्लिक़ चन्द मुफ़ीद बातें	21	मआख़िज़ो मराजेअ़	45
		फ़ेहरिस्त	46

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

नेक नमाज़ी बनने के लिये

हर जुमे'रात बा'द नमाज़े मग़रिब आप के यहां होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात शिर्कत फ़रमाइये ❁ सुन्नतों की तरबियत के लिये मदनी क़ाफ़िले में आ़शिक़ाने रसूल के साथ हर माह तीन दिन सफ़र और ❁ रोज़ाना "फ़िक्रे मदीना" के ज़रीए़ मदनी इन्आ़मात का रिसाला पुर कर के हर मदनी माह की पहली तारीख़ अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ

मेरा मदनी मक़्सद : "मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।" اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ अपनी इस्लाह़ के लिये "मदनी इन्आ़मात" पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये "मदनी क़ाफ़िलों" में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ

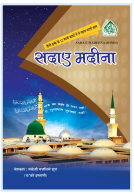

DAWAT-E-ISLAMI

0148667

मक्तबतुल मदीना (हिन्द) की मुख़्तलिफ़ शाख़ें

❁ देहली :- मक्तबतुल मदीना, उर्दू मार्केट, मटिया महल, जामेअ़ मस्जिद, देहली -6, फ़ोन : 011-23284560

❁ अह़मदाबाद :- फ़ैज़ाने मदीना, त्रीकोनिया बग़ीचे के सामने, मिरज़ापुर, अह़मदाबाद-1, गुजरात, फ़ोन : 9327168200

❁ मुम्बई :- फ़ैज़ाने मदीना, ग्राउन्ड फ़्लोर, 50 टन टन पुरा स्ट्रीट, खड़क, मुम्बई, महाराष्ट्र, फ़ोन : 09022177997

❁ हैदराबाद :- मक्तबतुल मदीना, मुग़ल पुरा, पानी की टांकी, हैदराबाद, तेलंगाना, फ़ोन : (040) 2 45 72 786

E- mail : maktabadelhi@gmail.com, Web : www.dawateislami.net